''श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः''

ज्ञान भजन संग्रह

साखी–कीर्तन–आरती संकलन

संकलनकर्त्ता :
स्वामी ज्ञानप्रकाश जी

प्रकाशक :
जाम्भाणी साहित्य अकादमी

''श्री विष्णवे नमः''

ज्ञान भजन संग्रह

प्रकाशक : जांभाणी साहित्य अकादमी
सैक्टर-1, ई-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर, (राजस्थान)
Email - jsakademi@gmail.com

द्वितीय संस्करण : 2013

मूल्य : 20/-

ISBN : 978-93-83415-01-4

© : जांभाणी साहित्य अकादमी

-: मुद्रक :-

Gyan Bhajan Sangrah by Swami Gyanprakash
Pages : 64

भूमिका

ज्ञान भजन संग्रह नाम की यह लघुकाय पुस्तक हैं। इसकी मांग अत्यधिक होने से कई संस्करण निकल चुके हैं, इस बार भी यह संस्करण अवश्य ही जिज्ञासु भक्तों की मनोकामना पूर्ण करेगा। इसमें चुने हुए ज्ञान प्राप्त कराने वाले प्रिय भजन संकलित हैं। भजनों का महारण्य हैं जिसमें आप भटक सकते हैं तथा यथेष्ट लाभ भी प्राप्त नहीं कर सकते।सुविधा के लिये सुन्दर फूल फलों का बगीचा तैयार कर दिया हैं, इसमें रमण करते हुए ज्ञान सहित आनन्द भी प्राप्त कीजिये। उसी प्रकार की साखियां आरतियां भी आपके जीवन को सुख शान्ति प्रदान करेगी, यदि आप एकाग्र मन तथा श्रद्धा विश्वास के साथ इनका अध्ययन गायन करेंगे। मेरी समझ में तो यह पुस्तक यथा नाम तथा गुणों वाली है।

उन सभी श्रद्धेय कवि, संतों के हम आभारी हैं जिनकी ये रचनाएं हैं। संग्रहकर्ता परम पूज्य स्वामी श्री ज्ञानप्रकाश जी का परिश्रम भी सराहनीय हैं, जो इस कार्य को बड़े ही मनोयोग से किया हैं। अन्य कोई त्रुटि के लिये आगामी संस्करण तक हम क्षमा प्रार्थी हैं।

आपका—

कृष्णानन्द आचार्य

श्री विश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश (उतराखण्ड)

श्री सद्गुरू चरणेभ्यो नमः

ओ३म् गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ।।1।।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादा अक्षिशिरोरूबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते, सहस्त्र कोटि युगधारिणे नमः।2।

गोपालबालं भुवनैकपालम् ।
संसार माया मति मोह जालम्।।
यशोविशालं शिशुपालकालम् ।
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।3।।
करारविन्देन पदारविन्दम् ।
मुखारविन्दे, विनिवेशयन्तम् ।।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानम् ।
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।4।।

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदर वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे।।5।।

दोहा

जब तक रहेगी जिन्दगी, फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम कर लो श्रीराम से।1।
कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूंढ़े वन मांहि।
ऐसा घट में पीव हैं, दुनिया जानें नांहि।2।
दोष पराया देखिकर, चले हंसत हंसत।
अपनें याद न आवहि, जिनका आदि न अन्त।3।
खान–पान सुख भोग में, पशु भी परम सुजान।
का अधिकता मनुज की, जो न भजे भगवान।4।
दुनियां के जो मजे हैं, हरगिज भी कम न होंगे।
चरचे यहीं रहेंगे, अफसोस हम न होंगे।5।
ग्रंथ पन्थ सब जगत के, बात बतावत तीन।

राम हृदय मन में दया, तन सेवा में लीन।6।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे ताड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।7।
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आप भी शीतल होय।8।
बोली तो अनमोल हैं, जो कोई जानें बोल।
हृदय तराजू तोलकर, तब मुख बाहर खोल।9।
नारायण परलोक में, ये दो आवत काम।
देना मुट्ठी अन्न की, लेना हरि का नाम।10।
सांई इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं , साधु भी भूखा न जाय।11।

चौपाई

प्रभु जी सुसंशुद्ध रीति चलाये।
तरै जीव जाते सोई ज्ञान गाये।।
धरै ध्यान ओंकार सो विष्णु ही का।
सदा सच्चिदानन्द जाम्भेश जी का।।
करैं स्नान सन्ध्या सुगन्धादि होमैं।
व्रती सब बने मास मध्या कुहू मैं।।
सदा झूठ निन्दा नशा चौर्य त्यागी।
रहे शील सन्तोष धैर्यानुरागी।।
गहै ना कभी राक्षसी नील बाना।
स्वयं पाक भोजी पिये नीर छाना।।
प्रसूता वधु बीस दस दिन बितावे।
करै आहुति तो गृही कर्म पावै।।
जुदा पांच दिन लौ बीच नारी।
रहे फिर शुचि हो सुवस्त्रादि धारी।।
दया सो लखो जीव जन्तु जहांलो।
क्षमा आदि सों वैष्णवी धर्म पालो।।
कभी काटिये ना हरा कोई वृक्षा।
जहां तक बने कीजिये जीवरक्षा।।

तथा कीजिये ना पशु बीज हत्या।
तजो तांसु संसर्ग जो पाप वृत्या।।
कमाई किये में दशो अंश काढ़ो।
करी यत्न जाते स्वधर्मादि बाढ़ो।।
खुशी और गमी में सदा होम कर्मा।
करो दीन रक्षादि को छोड़ भर्मा।।
हितु हो परस्पर अविद्या मिटावो।
प्रभु विष्णु जम्भेश को नाम गावो।।

'साखी' लय तारण हार

भगवत आय भली बुध देवै लेना है सौ लेइयो जीवनैं।।टेक।।
सतगुरू आय संता नें तारयो, सद्मार्ग में लाइयो जीवनैं।
सतयुग में जब सृष्टि रची थी,भक्त प्रहलाद सहाइयो जीवनैं।
हिरणाकुश को मार गिरायो, भक्त हुए शरणाइयो जीवनैं।
पंथ विश्नोई कियो स्थापन, प्रहलाद पंथि कहाइयो जीवनैं।
त्रेता में जब सत्य हरिश्चन्द्र, सत का पथिक बनाइयो जीवनैं।
बिछड़े जीवों को पार किया तब, विश्नोई पंथ अनुसरियो जीवनै।
द्वापर में जब राजा युधिष्ठर, युद्ध में वीर कहाइयो जीवनैं।
विश्नोई मार्ग सत्य का पालक, सत्य सदा द्वापुरियो जीवनैं।
कलि काल कहूं कठिन कराला,संत भक्ता नें दुभरियौ जीवनैं।
विष्णु व्यापक सकल सहायक, जम्भरूप अवतरियो जीवनैं।
प्रहलाद कवल के कारण आये, मरूधर में सुहाइये जीवनैं।
ज्ञान ध्यान उपदेशक स्वामी, अद्भुत रूप दिखाइयो जीवनैं।
भगवा भेष भक्त भय हारी, भगवत् आप भजइयो जीवनैं।
जाट भाट जोगी संन्यासी, सबकूं समता सिखाइयो जीवनैं।
सकल ही नर नारायण रूप, विश्व रूप नर हरियो जीवनैं।
प्रभु आप आय दर्शन दिखाये, ज्ञान सुण्या भव तरियो जीवनै।
भजन बताया गुरु जम्भेश्वर नें, विष्णु विष्णु उच्चरियो जीवनै।
नियम नव वीस दिये जन पालक,आवागवण चुकाइयो जीवनै।
कृष्णानन्द खड़ो कर जोड़ै, अब लीज्यो अपणाइयो जीवनै।
तेरे गुणों को गावण चाहूं, बुद्धि बल बिगसाइयो जीवनै।

आरती 1

आरती जय जम्भेश्वर की, परम सतगुरू परमेश्वर की। गुरूजी जब पींपासर आये, सकल संतों के मन भाये। देवता सिद्ध मुनि दिगपाल, गगन में खूब बजावे ताल। हुआ उछाह लोहट नरनाह, मगन मन मांह देख छवी। निज सुत सुन्दर की ।। आरती जय जम्भेश्वर की.....। परम सुख हांसा मन मांही, प्रभु को गोदी बैठाइै। नगर की मिली सभी नारी, गीत गावै दे दे ताली। अलापे राग, बड़े हैं भाग, पुन्य गये जाग, धन्य हैं लीला नटवर की ।। आरती जय जम्भेश्वर की.....। चरानें गऊवों को जावे, चरित्र गवालों को दिखलावे। करे सैनी से सब काजा, कहावे सिद्ध श्री जम्भ राजा। रहे योगीश, भक्त के ईश, गुरू जगदीश, पार नहीं महिमा प्रभुवर की। आरती जय जम्भेश्वर की.....। गुरूजी फिर समराथल आये, पंथ श्री विश्नोई चलाये। होम, जप, तप, किया सारे, देख सुर, नर, मुनि सब हारे। किया प्रचार, वेद का सार, जगत आधार, सम्मति जिसमें विधि हर की।। आरती जय जम्भेश्वर की.....। गुरूजी अब सेवक की सुणियो, नहीं अवगुण चित में धरियो। शरण निज चरणों की रखियो, पार भव से नैया करियो। यही हैं आश, राखियो पास, कीजियो दास, कहूं नित जय जय गुरूवर की। आरती जय जम्भेश्वर की .....।

आरती 2

ओ३म् जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।।
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे।।ओ३म्।।
जो ध्यावै फल पावै दुःख बिनसे मन का।।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।।ओ३म्।।
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।।
तुम बिन ओर न दूजा, आस करूं जिसकी।।ओ३म्।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।।ओ३म्।।
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता।।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता।।ओ३म्।।
तुम हो एक अगोचर सब के प्राण पति।।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।।ओ३म्।।
दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे।।
अपनें हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।।ओ३म्।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।।ओ३म्।।

भजन 1

एक भावुक भक्त की भावना

मैं तो उन सन्तन का हूं दास जिन्होंनें मन मार लिया,
मन मारया तन वस किया और सभी भरम भया दूर।
बाहर तो कछु दीसे नांहीं अन्दर चमकत वाके नूर।जिन्हों...
आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम,
उनमें तो कछु अन्तर नांहीं साधु कहो चाहे राम।जिन्हों...
काम क्रोध मद लोभ छोड़ कर मेटी जग की आस,
बलिहारी उन संतन की जिन प्रगट कियो हैं प्रकाश।जिन्हों.
नरसी जी के सद्गुरू स्वामी दिया अमी रस पाय,
एक बूंद सागर में मिल गयी क्या जी करेगा यमराज।जिन्हों.

भजन 2

जामें भजन राम को नांहीं।तेहि नर जनम अकारथ खोयो,
यह राखो मन मांहीं।।1।।
तीरथ करै बरत पुनि राखै, नहिं मनुवा बस जाको।
निष्फल धर्म ताहि तुम मानों सांच कहत मैं याको।।2।।
जैसे पाहन जल में राख्यो भेदे नहिं तेहि पानी।
तैसे ही तुम ताहि पिछानी भगति हीन जो प्रानी।।3।।
कलि में मुक्ति नाम ते पावत गुरू यह भेद बतावै।
कह नानक सोई नर गुरूवा जो प्रभु के गुन गावै।।4।।

भजन 3

जर्रे जर्रे में हैं झांकी भगवान की,
किसी सूझ वाली आंख नें पहचान की।।टेक
नामदेव नें पकाई रोटी कुत्ते नें उठाई,
पीछे घी का कटोरा लिये जा रहे।
बोले रूखी मत खाओ, स्वामी घी तो लगाओ।
मुख अपना क्यों मुझसे छिपा रहे।
तेरा मेरा एक नूर, फिर काहे मजबूर,
तूनें शक्ल बनाई क्यों श्वान की।।
मुझे ओढ़नी उढ़ाई हैं इन्सान की।।जर्रे–जर्रे।।1।।
निगाह मीरा की निराली, पीकर जहर की प्याली,
ऐसा गिरधर बसाया हर श्वास में।
जब आया काला नाग, बोली धन्य मेरे भाग,
आज आये प्रभु सांप के लिबास में।
आओ आओ बलिहार, काले कृष्ण मुरार,
बड़ी कृपा हैं कृपानिधान की।
धन्यवादी हूं मैं आपके एहसान की।।जर्रे जर्रे।।2।।
इसी तरह सूरदास, निगाह जिनकी थी खास,
ऐसा नयनों में नशा था हरि नाम का।
जब नयन हुए बंद, तब आया वह आनन्द,
आया नजर नजारा घनश्याम का।
हर जगह वह समाया, सारे जग को दिखाया,
आई आंखों में रोशनी ज्ञान की।
देखी झूम झूम झांकी भगवान की।।जर्रे जर्रे।3।
गुरू नानक कबीर नहीं, जग में नजीर,
पत्ते पत्ते में था देखा निरंकार को।
वही हाजिर हजूर, नजदीक और दूर,
समझाया था यही संसार को ।
नत्थासिंह नवाशहर गांव यह आबाद,
मेहरबानियां हैं उस मेहरबान की ।
सारी चीजें हैं ये एक ही दुकान की।।जर्रे जर्रे।।4।।

भजन 4

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सबनें कियो भजन।
आई ब्रह्म कमण्डल में श्री गंगा जी हैं तार तरन । टेक ।
विमल रूप गंगे निर्वाणी अखण्ड ज्योति गंगा की धारा।
विष्णु से ब्रह्मा पे आई तब तो शिवजी नें धारा।।
जटा भी उनको शोभा दीनी रूप भी सुन्दर सा धारा।
फिर वृतान्त कहूंगा कैसे तीन लोक को उद्धारा।।
अस्तुति करिके आप हरि नें शीश चढ़ाई हुए मगन।।आ.।।
करी तपस्या भागीरथ नें मगन हुए शंकर भोला।
कहें नाथ हमसे कुछ मांगो, मुख से भागीरथ बोला।।
गंगा हमको देहुं नाथ, मैं शुद्ध करूं कुल का चोला।
फिर प्रसन्न होकर शंकर नें अपनी जटाओं को खोला।।
एक बूंद गंगाजल निकला जटा से अनहद कियो यत्न।आ.
एक बूंद से तीन धार हुई धारा एक गई पाताल।
शेषनाग नें दर्शन पाए जीवन मुक्त हुए तत्काल।।
एक धार आकाश गई सब देख देवता हुए खुशहाल।
हाथ जोड़कर दण्डवत् कीनो फिर उनको तारा तत्काल।।
एक धार भागीरथ लाये मंझलोक तारन कारण।आ.
मृत्युलोक में चली जोर से फिर सागर नें करी पुकार।
हाथ जोड़कर सागर बोला तुमरे बल को आर न पार।।
तुम ना मुझमें जाऊ समाई तुमरो बल हैं बेशुमार।
फिर प्रसन्न होकर गंगा नें अपनी धारा करी हजार।।
नाम पड़ा तब गंगासागर कहे बनारसी नितकर दर्शन।।आ.

भजन 5

रहना नहीं देश विराना हैं।।टेर।।
यह संसार पुड़ी कागज की बूंद पड़े घुल जाना हैं।।1।।
यह संसार कांटे की बाड़ी उलझ पुलझ मर जाना हैं।।2।।
यह संसार झाड़ और झांपड़ आग लगे बरि जाना है।।3।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सत्गुरू नाम ठिकाना हैं।।4।।

भजन 6

"धरती संता री"

धरती संतारी २, ओहो धरती संतारी।
इनैं तो सारो ही जग जाणें दुनिया इणरो नाम बखाणें।
छोटा मोटा सब पहचाणें ।। धरती संतारी २ ।।
आभो बरसे मुसलधार, पड़ रही ओलारी बोछार।
तपरे आगे मानी हार ।। धरती संतारी २ ।।
सूरज धरती खूब तपाई, बाजती लूवां भी शरमाई।
गरमी झुक चरणों में आई ।। धरती संतारी २।।

भजन 7

सत्गुरू द्वारे पर गजब हो गया,
अहंब्रह्म जानकर जगत खो गया।टेर
सत्गुरू द्वारे पर बह ज्ञान गंगा,
निर्मल जल जाका मन चंगा,
डुबकी लगाकर सारा मल धो गया।टेर
सत्गुरू द्वारे पर यह फैसला हुवा,
सब कुछ मैं ही हूं जगत अन हुवा,
जानता हूं सब कुछ जहां जो गया।टेर
सत्गुरू द्वारे पर सन्तोष पा लिया,
भव दुःख मेट कर सुखकोश पा लिया,
हृदय भूमि विच प्रेम बीज बो गया।टेर
सत्गुरू द्वारे पर बिछी हैं शान्ति सइया,
मिलता हैं विश्राम वहां कोई न जगैया,
ब्रह्मानन्द पाकर थका मन सो गया।टेर

भजन 8

साधु का क्या इतबार मन चाहे तुम्बा ठाले।टेर।
कोई नहीं समझे प्यारा मित्र, मन मानें जद होजे तितर,
फिर होजे परले पार, कित आगे अलख जगाले।।साधु.....
चाल्या सन्त मूल डटे नां, लायले आसन फिर हटे नां,
फिर बैठे पलाथी मार, कित ऊंचा सांस चढ़ाले।।साधु.....
राजी होवे तो दे दे माया, और बिगड़ी बात पर खोयदे काया।
होजे मरणें न तैयार, कपड़ों में आग लगाले।।साधु.....
षटरस भोजन सारा खाजे, तेल फुलेल देही पर लायले,
फिर छिन में देवे तार, फिर पल में भस्म रमाले ।।
साधु का क्या इतबार मन चाहे तुम्बा ठाले।।

भजन 9

गुरू से प्रीत करो रे भाई, तेरो जनम मरण मिट जाई।टेक
मानुष तन जग में अति दुर्लभ, बार बार ना पाई।
सत्संग में बैठ के प्यारे, कर कुछ नेक कमाई।।गुरू से.....
गुरू का वचन महा अमृत हैं, हरि का नाम सुखदाई।
पारब्रह्म परमेश्वर पूरण, घट में दे दर्शाई।।गुरू से.....
राम कृष्ण नानक कबीर सब, नाम की महिमा गाई।
हनुमान सच्चा गुरू मुख बन, नाम ही बीच समाई।।गुरू से.
यह संसार झूठ सपना हैं, गुरू मुख ही पतियाई।
सकल कामना तजकर अन्दर, रहे नाम लौ लाई।।गुरू से.
यह संसार गुरू का समझे गुरू चरणन चित लाई।
शिव अरू विष्णु सभी नें हरदम, नाम की महिमा गाई।गुरू से.
जगत जीव के गुरू इष्ट हैं, सदा करो सेवकाई।
भुक्ति मुक्ति सब को ठुकराकर, सदा रहो शरनाई।।गुरू से.
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड की दौलत, कल्प अनेक लुटाई।
तुले नहीं गुरू वचन जानलो, हृदय गहो सेवकाई।।गुरू से.

भजन 10

अर्जुन का भाव

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
हैं जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।अब.....
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।अब.
जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं, ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे अवगुण दोष समर्पित हो, करतार तुम्हारे हाथों में।अब...
यदि मानुष का मुझे जनम मिले,तो तव चरणों का पुजारी बनूं
इस पूजक की इक इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में।अब.
जब जब संसार का कैदी बनूं, निष्काम भाव से कर्म करूं।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं, निराकार तुम्हारे हाथों में।अब.
मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूं तूं नारायण हैं।
मैं हूं संसार के हाथों में संसार तुम्हारे हाथों में।अब.....

भजन 11

दर्शन दो घनश्याम नाथ मोरी अंखियां प्यासी रे।
मन मन्दिर की ज्योति जगादो घट घट वासी रे।।
निर्बल के बल धन निर्धन के, तुम रखवारे भगत जनन के।
तेरे भजन में सब कुछ पाऊं हे दुख नाशी रे।
नाम जपे पर तुझे न जानें, उनको भी तूं अपना मानें।
तेरी दया का अन्त नहीं हैं मिटे उदासी रे।।
मन्दिर मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी न दीखे सूरत तेरी।
अंधा देखे लंगड़ा चलकर पहुंचे काशी रे ।।
पानी पीकर प्यास बुझाऊं, इस नैनन को कैसे समझाऊं।
आंख मिचौनी छोड़ो अब तो मन के वासी रे ।।

भजन 12

आज तो आनन्द म्हारे कृष्ण आया पावना। गोपाल आया..
फूली – फूली मैं फिरूं फूला मेरा आंगना।
फूलांदा मैं आसन लाई फूलां दा बिछावना।।
मथुरा जी में कंस मारयो लंका पति रावना।
बलराजा के द्वारे जाके रूप धारो बावना।।आज..।।
जमुना जी के नीरे तीरे गऊवों को चरावना।
गोप ग्वाल सब संग मिलके मक्खन को लुटावना।।आज..।।
मधुवन में जाके श्यामा बंसी को बजावना।
गोपियों को संग मिलके रास को रचावना।।आज..।।
काली दह में कूद पड़यो नाग नाथ घर आवना।।
गोकुल गढ़ में बंटे बधाई मंगल चाव गावना।।आज..।।
गोरड़ी में गऊ दुहाई गुदली खीर रंधावना।
खीर खांड का अमृत भोजन गरू को जिमावना।।आज..।।

भजन 13

तूं राम नाम लिये जा और दान दिये जा,
यूं आनें वाली मुश्किलें आसान किये जा।
खाना–पीना पहिनना व सोना तो जरूरी हैं,
तेरे लिये सब कुछ होना तो जरूरी हैं।
कुछ वहां के लिये भी तो सामान किये जा।।आनें...।।
आत्मा को खुला छोड़ क्योंकि वह आजाद हैं,
मन को तूं बांध ले यह बड़ा ही मुराद हैं।
हर बात में नां इसे ही प्रधान किये जा।।आनें...
कोल्हू के ओ बैल आठों पहर चाहे काम कर।
पर दो घड़ी आराम से कभी तो राम राम कर।
इतना तो अपनें आप पर अहसान किये जा।।आनें...
जीवन की तेरी रस्सी के जो बल थे सारे जल चुके,
जो तीर थे जवानी के तरकस में सारे चल चुके।
यूं ही न टेढ़ी कमर को कमान किये जा।।आनें...
गर्दन झुकाए ढूंढ़ता जवानी को इस हाल में,
कीमत न डाली नत्थासिंह जीवन की अस्सी साल में।
अब तो मानुष चोले का कुछ सामान किये जा।।आनें...

भजन 14

भाव का भूखा हूं मैं, और भाव ही बस सार हैं।
भाव से मुझको भजे तो, भव से बेड़ा पार हैं।।भाव.....
अन्न धन अरू वस्त्र भूषण, कुछ न मुझको चाहिये।
आप हो जावे मेरा, बस पूर्ण यह सत्कार हैं।।भाव.....
भाव बिन सब कुछ भी दे डाले तो मैं लेता नहीं।
भाव से एक फूल भी दे, तो मुझे स्वीकार हैं।।भाव.....
भाव बिन सुन्नी पुकारे, मैं कभी सुनता नहीं।
भाव पूरित टेर ही, करती मुझे लाचार हैं।।भाव.....
भाव जिस जन में नहीं, उसकी मुझे चिन्ता नहीं।
भाव वाले भक्त का, भरपूर मुझ पर भार हैं।।भाव.....
जो मुझी में भाव रख कर, लेते हैं मेरी शरण।
उनके और मेरे हृदय में, एक रहता तार हैं।।भाव.....
बांध लेते हैं मुझे यों, भक्त दृढ़ जंजीर में ।
इसलिये इस भूमि पर, होता मेरा अवतार हैं।।भाव.....

भजन 15

भज मन बद्री विशाल नटवर गोपाला।
गोपाला नन्द लाला भजमन बद्री विशाला।।टेर
मीरा बाई सदन कसाई, हरि भजन से मुक्ति पाई।
भजमन बद्री विशाल नटवर गोपाला ।।1।।
भरी सभा में द्रोपदी रोई तुम बिन प्रभु मेरा नहीं कोई
दुशासन ले लाज हमारी आओ लाज बचाओ मोरी।।2।।
नटवर गोपाला, गोपाला नन्द लाला भज मन बद्री विशाला।
दुर्योधन की मेवा त्यागी, साग विदुर घर खायो।
नटवर गोपाला, भजमन बद्री विशाला ।।3।।
गोकुल में लीला दिखलाई, अर्जुन को गीता सिखलाई,
उधो को निज ज्ञान बतायो, नर नारायण को रूप दिखायो।
सब जग को सन्मार्ग दिखायो,
नटवर गोपाला भजमन बद्री विशाला ।।4।।

भजन 16

मेरा मन मानता नहीं मैं बार बार समझाऊं।।टेर।।
एक देव की पूजा मेरी दूजा देव नहीं ध्याऊं।
मेरे घट भीतर बसे कुदरती नित उठ दर्शन पाऊं।।टेर।।
व्रत करूं जब पांचों रोवे इह दोजग में जाऊं।
धूनी तपूं तो मेरी देही जलत हैं किस विधि मुक्ति पाऊं।टेर।
राह चलूं तो मेरे कांटा लागे ना कोई जीव सताऊं।
मेरे घट भीतर गंगा जमना ना कोई तीर्थ नहाऊं। टेर ।
सुन में जाना सुन में आना सुन में रास रचाऊं।
रामानन्द के भणत कबीरा प्रेम ज्योति मिल जाऊं।टेर।

भजन 17

आये–आये विदुर घर पावना जी।विदुर नहीं घर थी विदुरानी
आवत देखे सारंग पानी।मन विच चिंता नहीं समानी
भोजन कहां जिमाऊंना जी ।।आये....
केला एक प्रेम से लाई, गिरी–गिरी सब देई गिराई ।।
छिलका देती श्याम मुख मांहीं, लागे प्रेम सुहावना जी।।आये.
इतनें में विदुर जी आये, खोटे खरे वचन सुनाये ।।
छिलका देती श्याम मुख मांही, कहां गुमाई हमारी भावना जी।आये.
केला लिया विदुर हाथ मांही, गिरी–गिरी देते गिरधर मुख मांहीं।
कहते कृष्ण जी सुनो विदुर जी, वह तो स्वाद नहीं आवना जी।आये.
श्याम सूर यह विनती गाई , कृष्ण विदुर घर आवना जी।।आये.

भजन 18

मेरा जीवन बीता जाये श्याम नहीं आये, हरी मैं क्या करूं।
कभी मिले श्याम सुन्दर को, कभी बाहर कभी अन्दर को।
मेरा मन थर थोला खाये, निकट नहीं आवे, हरी मैं क्या करूं।।मेरा.
कभी मिले देवकी नन्दन, कटे सब दुःखों के बन्धन।
बिना मिले मेरा जी घबरावे, बहुत तड़फावे, हरी मैं क्या करूं।।मेरा.
आसा का दीप जला कर देखूं, थी मन में छिपाकर।
कभी सांवला सूरत दिखलावे, मुझे अपनावे हरी मैं क्या करूं।।मेरा.
धन धाम कुटुम्ब परिवारा, दुःखों से भरा जग सारा।
चाहे तीन लोक मिल जावे, शांति नहीं आवे, हरी मैं क्या करूं।।मेरा.
तुम तीन लोक के राजा, मैं कपटी हूं अधम अकाजा।
पापी नें कौन अपनावे, सूरत दिखलावे, हरी मैं क्या करूं।।मेरा.

भजन 19

झूठी देखी प्रीत जगत में झूठी देखी प्रीत।
अपनें सुख को सब कोई रोवे क्या दारा क्या मीत।।
मेरी मेरी सब ही कहत हैं हित सों बांधे चीत।
अन्त काल कोई संग न चाले यही अचरज की रीत।।
मन मूर्ख जिन अजहुं न समझत सुखदे हारे नीत।
नानक भव जल पार करो जब गाओ हरि के गीत।।

कीर्तन 20

गरूड़ गामी मधू सूदन मुरारे श्याम मन मोहन,
यह उसका नाम हैं प्यारे जो दुनिया का दाता हैं।
पुकारे प्रेम से कोई तो नंगे पांव आता हैं।।1।।
जय मीरा के गिरधर नागर जय तुलसी के सीताराम।
जय नरसी के सांवरिया जय सूरदास के राधेश्याम।।2।।
तेरा अवसर बीत जाय, भजो रे मन गोविन्दा।
नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।।3।।
रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम।
आओ मेरे भोले भाले राम, भक्तों के रखवारे राम।।4।।
तन में राम मन में राम, रोम रोम में सीताराम।
रघुपति राघव राजाराम, पतितपावन सीताराम।।5।।
राम नाम सार हैं, भजले बेड़ा पार हैं।
राम नाम बिना बन्दे, जीवन ही बेकार हैं।।6।।
श्री राम कहो राधेश्याम कहो मन मेरे।
चाहे राम कहो चाहे श्याम कहो, मिट जावेंगे संकट तेरे।7।
राधे कृष्ण गोपी कृष्ण गोविन्द गोपाला।
श्याम सुन्दर दर्शन देना मोहन मुरली वाला।।8।।
आज मंगलवार हैं सजा यह दरबार हैं।
आजा महावीर जी, तेरा इन्तजार हैं।।9।।
श्री राम सुमिर जग लड़नें दे ।
जो कोई गुरू का कहना न मानें, नरक पड़े सो पड़नें दे।

भजन 21

आना सुन्दर श्याम हमारे कीर्तन में आप भी आना,
राधा को भी लाना, आकर रास रचाना हमारे कीर्तन में।
आना सुन्दर श्याम.....
आप भी आना अर्जुन को भी लाना,
गीता का ज्ञान सुनाना हमारे कीर्तन में।आना.....
आप भी आना नारद को भी लाना,
बन्सी मधुर बजाना हमारे कीर्तन में।आना.....
आप भी आना ग्वालों को भी लाना,
आकर माखन लुटाना हमारे कीर्तन में।आना.....
आप भी आना ऊधो जी को भी लाना,
वेदों का ज्ञान सुनाना हमारे कीर्तन में।आना.....
आप भी आना, गोपियों को भी लाना,
बंसी की तान सुनाना हमारे कीर्तन में।आना.....

भजन 22

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो,
प्रेम से तुम प्रभु को रिझाते चलो।
लोग कहते हैं भगवान आते नहीं,
प्रेम से तुम प्रभु को बुलाते नहीं।
टेर प्रहलाद की सी लगाते चलो।।कृष्ण गोविन्द.....
लोग कहते भगवान खाते नहीं,
भीलनी की तरह तुम खिलाते नहीं।
साग बिदुर की तरह तुम खिलाते रहो।।कृष्ण गोविन्द.....
लोग कहते हैं भगवान आते नहीं,
प्रेम से तुम प्रभु को बुलाते नहीं।
द्रोपदी की तरह टेर लगाते चलो।।कृष्ण गोविन्द.....
दु:ख में भूलो नहीं, सुख में फूलो नहीं।
प्राण जावे मगर नाम भूलो नहीं।
अपनें मन को सुमारग चलाते चलो।।कृष्ण गोविन्द.....
काम करते चलो नाम जपते चलो,
अपनें मन में हरि प्रेम बढ़ाते चलो।
नाम धन का खजाना बढ़ाते चलो।।कृष्ण गोविन्द.....
सन्त चलत हैं गज की चाला कूकर भौंक मरे सो मरनें दे।।
कहत कबीर सुनों भाई साधो, हरि का कीर्तन करनें दे।
श्री राम सुमिर जग लड़नें दे।।10।।

भजन 23

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवान पूरी होय।।
विद्या बुद्धि तेज बल सबके भीतर होय।
दूध पूत धन धान्य से बाकी बचे न कोय।।
आपकी भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग द्वेष से चित मेरा कोसों भागे दूर।।
मिले भरोसा नाम का हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश।।
पाप से हमें बचाइये करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय कर सब को करो निहाल।।
दिल में दया उदारता मन में प्रेम और प्यार।
हृदय में धैर्य वीरता सबको दो करतार।।
नारायण तुम आप हो पाप के मोचन हार।
क्षमा करो अपराध सब करदो भव से पार।।
हाथ जोड़ विनती करे सुनिये कृपा निधान।
साधु संग सुख दीजिये सबका हो कल्याण।।

भजन 24

देखी बहुत निराली महिमा सत्संग की।
सत्संग अन्दर मोती हीरे, मिलते हैं पर धीरे–धीरे।।
जिसनें खोज निकाली महिमा सत्संग की।।देखी.....
सत्संग ही सब संकट टारे, डूब रहे को सत्संग तारे।
दिन दिन हो खुशहाली महिमा सत्संग की।।देखी.....
सत्संग सच्चा तीरथ भाई, करते जिनकी नेक कमाई।
कर्म हीन रहे खाली महिमा सत्संग की।।देखी.....
सत्संग में तुम प्रेम बढ़ाओ, समय न अपना व्यर्थ गंवाओ।
देश पिटे नहीं ताली महिमा सत्संग की।।देखी.....

भजन 25

जपता नहीं हरि नाम तुं बकवाद में दिन खो रहा।।टेर।।
माला तूं फेरे कपट की बातों का मनिया पो रहा।
जपता हैं विषयन को इस जग का तूं अवगुन टो रहा।।1
उठ चलना हैं चेतो करो क्यो बेफिकर से सो रहा।
शिरकाल चक्कर घूमता सो बखत तेरा हो रहा।।2
यह जन्म नर का पायके इससे तूं अघ क्यों ढ़ो रहा।
जहां बेल अमृत अमर हैं क्यों बेल विष की बो रहा।।3
इस ठोर रहना हैं नहीं, तेरे देखतां सब कोई गया।
कह दास पुरूषोतम मन हरिदास क्यों नहीं हो रहा।।4

भजन 26

मनुवा नाहिं विचारी रे।
तेरी मेरी कहता उमर खोदी सारी रे।।
गर्भवास से रक्षा कीनी सदा बिहारी रे।
बाहर काढ़ो नाथ भक्ति करस्यूं थारी रे।।1
बालपनें में लाड लडायो माता थारी रे।
तरूण भयो तब आयी जवानी तिरिया प्यारी रे।।2
पीछे तूं माया संग लिपट्यो जोड़ी यारी रे।
कोड़ी कोड़ी खातर लेतो राड़ उधारी रे।।3
सत्गुरू बात ज्ञान की किन्हीं लागी खारी रे।
जै कोई कहता भजन को जद दीनी गारी रे।।4
वृद्ध भयो जद ऐसे बोली घर की नारी रे।
कद मरसी यो डैण छुटै लार हमारी रे।।5
पीछे तो मन सोच कियो कछु बनी न म्हारी रे।
अब चौरासी भोगो देखो करनी थारी रे।।6
रूक गया कण्ठ दशों दरवाजा मच गई घारी रे।
पुंजी थी सो भई बिरानी हुयो भिखारी रे।।7
कालुराम जी सीख दई सों मानी सारी रे।
पार लगादो नाथ धानों सरण तिहारी रे।।8

भजन 27

मनुवा राम सुमर ले रे।
आसी तेरे काम नाम की बालद भर ले रे।।आसी..
संत कहे सो बात धर्म की चित में धर ले रे।
मनुष्य जन्म कूं सुफल करै तो यहां ही करले रे।।1
भवसागर से मुश्किल जाणों नाके परले रे।
राम भजन की नाव बणाके पार उतरले रे।।2
खोटी खोटी करे कमाई कुछ तो डरले रे।
आगे ठाडो धर्मराज तेरी खूब खबरले रे।।3
काम क्रोध मद लोभ मोह पांचों से टर ले रे।
कह पुजारी तिरयो चाहै तो जीवत मरले रे।।4

भजन 28

सुन लीज्यो विनती मोरी। मैं शरण गही प्रभु तोरी।।टेक
कितनें ते पतित उबारे । भवसागर पार तारे।।
मैं सबका नाम न जानूं । कोई कोई नाम बखानूं।।
अम्बरीष सुदामा नामा । तुम पहुंचाये निज धामा।।
जब पांच वर्ष ध्रू बाला । तब दरश दियो नन्दलाला।।2
प्रहलाद की टेक राखी । यह जानत हैं जग साखी।।
शबरी के फल तुम खाये । त्रिलोचन के घर आये।।3
कबीरा के बालद लाये । तैं काज किये मन भाये।
गज ग्राह से आन छुटायौ । अब हमको क्यों बिसराये।।4
पाण्डव की करी सहाई । द्रोपद की लाज रखाई।
धन्ना को खेत उपजायो । तैं साग बिदुर घर खायो।।5
मीरा तेरे रंग भीनी । नरसी की हूंडी लीनी ।
गणिका नें पार लगाई । कर्मां की खिचड़ी खाई।।6
मोहे काम क्रोध नें घेरा । ममता नें किया अन्धेरा।
मैं लोभ दी फंसी पड़िया । तेरा नाम बिसर दुःख पड़िया।।7
सनकादिक विरंचि ध्यावै । तेरा शेष पार न पावै।
चर्णदास पर कृपा कीज्यो । मोहे भक्ति दान वर दीज्यो।।8

भजन 29

दुनिया देख क्यों भई बावरी बीती जाय बहार।
कितकी थी कित आनफसी हैं अपनो सोच विचार।।1
जबलग नाम नजर नहिं आवे जीवन जन्म धिक्कार।
पलका उपर पिव हैं तेरा टुके एक चश्मा सार।।2
कहा कहूं बरणा नहिं जावे शोभा अनंत अपार।
शिव सनकादिक ध्यान धरत हैं विष्णु कोट हजार।।3
नव दरवाजा बंदकर राखो दशवें की कूंची सहार।
आसन ऊपर अधर सिंहासन दुलहन को दरबार।।4
सुनकी सैल करी सैलानी कहै बिहारीलाल ।
आत्म आर – पार हम देख्या दिल अन्दर दिलदार।।5

भजन 30

दो दिन का जग में खेला सब चलाचली का मेला। टेर
कोई चला गया कोई जावे, कोई गठड़ी बांध सिधावै जी,
कोई खड़ा तैयार अकेला।।1।।
सब कर पाप कपट छल माया, धन लाख करोड़ कमाया जी
संग चले न एक अधेला।।2।।
सुत नार मात पितु भाई, कोई अन्त सहाया नांहीं जी
क्यों भरे पाप का ठेला।।3।।
यह नश्वर सब संसार, कर भजन ईश का प्यारा जी,
ब्रह्मानन्द कहे सुन चेला।।4।।

भजन 31

नहिं मानत हैं जग अंधा देखो जड़ राख्या फंदा।टेर
मान–मान नर मूरख अन्धा क्यों गरब्यो नर गंदा,
धन जोबन तेरा यों छिप जायेगा ज्यों बादल में चन्दा।।1।।
जीवन मरन सदा नित परलै, अरहट नाल फिरन्दा,
बिन प्रभु भजन न थिर होवेगा गोल माल का धन्धा।।2।।
मात पिता तेरा कुटुम्ब कबीला सोई न लावै संघा,
दिन चार का चमत्कार हैं क्यों छावत हैं छंदा।।3।।
स्वासो–स्वास सांसना विसरै हिरदे जाय जयंदा,
भूल्यो फिरै भरम को मारयो कहै बिहारी बन्दा।।4।।

भजन 32

धन धन भोले नाथ बांट दिये तीन लोक एक पल भर में।
ऐसे दीनदयाल हो दाता कोड़ी नहीं रखते घर में।।टेक।।
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी।
विष्णु को दे दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी।।
इन्द्र को दे दी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी।
कुबेर को सारी वसुधा का कर दिया दान तुमनें भण्डारी।।
अपनें पास पात्र नहीं रखा रक्खा तो एक खप्पर कर में।ऐसे.
अमृत तो देवों को दे दिया आप हलाहल पान किया।
ब्रह्मज्ञान दे दिया उसी को जिसनें तुम्हारा ध्यान किया।।
भागीरथ को गंगा दे दी सब जग नें अस्नान किया।
बड़े बड़े पापियों का तुमनें पल भर में कल्याण किया।।
आप नशे में चूर रहे और भंग पिये नित खप्पर में।।ऐसे....
लंका पति रावण को दे दी बीस भुजा दश शीश दिये।
रामचन्द्र को धनुष बाण तुमही नें तो जगदीश दिये।।
मन मोहन को मोहनी दे दी मोर मुकुट तिरछी चितयें।
मुक्ति हेतु काशी में वास भक्तों को विस्वा बीस दिये।।
अपनें तन पर वस्त्र न राखे मगन रहे बाघम्बर में।ऐसे.....
नारद को तो वीणा दे दी गन्धर्वों को राग दिया।
ब्राह्मण को दे दिया कर्मकाण्ड और सन्यासी को त्याग दिया
जिस पर तुम्हारी कृपा हो गई उसको तुमनें अनुराग दिया।
देवीसिंह कहे बनारसी को सबसे उत्तम भाग दिया।
जिसको दिया उसी को पाया महादेव तुम्हारे वर में।ऐसे....

भजन 33

संसार में आकर मूढ़मते, क्यों जन्म अकारथ खोता हैं?
गीता के सार को भूल गया, यह जन्म किसलिये होता हैं?
तनमय पथ में रे अज्ञानी, क्यों ठोकर खाता फिरता हैं?
कारण क्या हैं सारी दुनिया, जग रही मगर तूं सोता हैं?
ताली दे दे कर हंसता हैं, क्यों मोह जाल में फंसता हैं?
लड़ता हैं तूं सत्कर्मों से, क्यों बीज पाप के बोता हैं?
अंधा मत बन, अब आंख खोल, हरि के चरणों में ध्यान लगा।
करके निर्मल मन अज्ञानी, क्यों समय व्यर्थ ही खोता हैं?

भजन 34

गये जब मथुरा को बांके बिहारी।
नहीं हैं यहां की उन्हें यादगारी।।
कहै कौन ऊधो यहां की कथायें,
धधकती हैं दिल में विरह की चितायें,
किसी भांति दिन याद में बीत जायें,
मगर बढ़ रही कल्प सी ये निशायें।
नहीं भूलती मूर्ति वो प्यारी प्यारी।
गये जब से मथुरा को बांके बिहारी।।
वही गोकुल हैं, वही बंसीवट हैं,
वही कुंजवन, वह ही जमुना का तट हैं,
मगर श्याम की याद में चित्रपट हैं,
ये रणस्थली का कहां आज नट हैं?
हुआ अब तो गोकुल दया का भिखारी।
गये जब से मथुरा को बांके बिहारी।।
महिर शोक में अपनपो खो रही हैं,
उधर देखो राधा पड़ी रो रही हैं,
कहो भाग्य ब्रज की कहां सो रही हैं,
दिलो शांति दुःख की घड़ी रो रही हैं।
नहीं शोक हरते, बने शोकहारी,
गये जब से मथुरा को बांके बिहारी।
न गायें विचारी घड़ी चैन पाती,
न यमुना की लहरें, अदायें दिखाती,
न बन रानियां डालियां हैं लगाती,
नहीं ''चन्द्रमणी'' बांसुरी स्वर सुनाती।
न आये हैं फिर भी मनोहर मुरारी।
गये जब से मथुरा को बांके बिहारी।।

भजन 35

राम नाम के साबुन से जो मन का मेल गंवाएगा।
निर्मल मन के शीशे में वह राम के दर्शन पाएगा।।
रोम रोम में राम हैं तेरे तुझ से कोई दूर नहीं।
देख सके जो आंख न उसको उन आंखों में नूर नहीं।।
देखेगा मन मन्दिर में जो ज्ञान की ज्योति जगायेगा।
राम नाम के साबुन से जो मन का मेल गंवायेगा....
यह शरीर अभिमान हैं जिसका प्रभु कृपा से पाया हैं।
झूठे जग बन्धन में फंसकर क्यों उसको विसराया हैं।
राम नाम का महामन्त्र यह साथ तुम्हारे जायेगा।
राम नाम के साबुन से जो मन का मेल गंवायेगा....
झूठ कपट निन्दा को त्यागो हर एक से तुम प्यार करो।
घर आये मेहमान की सेवा से ना तुम इन्कार करो।।
पता नहीं किस रूप में आकर नारायण मिल जायेगा।
राम नाम के साबुन से जो मन का मेल गंवायेगा....
निष्फल हैं सब भक्ति तेरी जब दिल में विश्वास नहीं।
मंजिल का पाना हैं क्या जब दीपक में प्रकाश नहीं।
निश्चय तो भवसागर से बेड़ा पार हो जायेगा।
राम नाम के साबुन से जो मन का मेल गंवायेगा....
माया का अभिमान हैं झूठा यह तो आनी जानी हैं।
राजा रंक अनेक हुए कितनों की सुनी कहानी हैं।।
गया समय फिर हाथ न आये सिर धुन 2 पछतायेगा।
राम नाम के साबुन से जो मन का मेल गंवायेगा।
निर्मल मन के शीशे में वह राम के दर्शन पायेगा।।

भजन 36

अगर हैं चाह तरनें की, तो प्रभु का नाम गायेजा।
सदा दिन रैन हर पल में भजन में दिल लगायेजा।।
न भ्राता काम आयेगा, न सुत पितु मात और दारा।
यह मतलब के सभी साथी, इन्हों से चित हटायेगा।।
न दौलत जायेगी संग में, तूं जिसमें भूला फिरता हैं।
चलेगा जोर कुछ भी नहीं, दिल की दुविधा मिटायेगा।।
करोगे कर्म जो खोटे, बिन भोगे बच ना पाओगे।
वह ईश्वर न्यायकारी हैं, हमेशा खौफ खायेजा।।
लुटेरे पांच हैं तन में तूं इन सबसे बचा रहना।
उतरना हैं जो भवसागर तो हरि का नाम ध्यायेजा।।

भजन 37

मन तूं क्यों पछतावे रे।
सिर पर श्री गोपाल बेड़ा पार लगावै रे।टेक।
निज करनी को याद करूं जद जी घबरावै रे।
बांकी महिमा सुन चित में धीर आवे रे।2।
जो कोई अनन्य मन से हरि को ध्यान लगावे रे।
वाके घर को योग क्षेम हरि आप निभावे रे।3।
जो मेरा अपराध गिनों तो अन्त न आवे रे।
ऐसे दीन दयाल चित पर एक न लावे रे।
शरणागत की लाज तो सब ही नें आवे रे।4।
तीन लोक को नाथ लाज हरि नाहिं गमावे रे।
पतित उधारन विरद वाको वेद बतावे रे।5।
मोय गरीब के काज विरद वह नांहि लजावे रे।
महिमा अपरम्पार तो सुर–नर मुनि गावे रे।6।
ऐसो नन्दकिशोर भक्त को त्रास मिटावे रे।
वह हैं रमा निवास भक्त की ओट निभावै रे।
तूं मत होय उदास कृष्ण को दास कहावै रे।7।

भजन 38

पिया के फिकर में भई दिवानी नैन गमा दिये रोय ।टेर।
तनकी चुंदरिया भई पुरानी दिन दिन बदरंग होय।
या चुंदरी मेरी फेरी रंगावो वोही रंग – रंग होय।1।
साध संत की सार न जानी मैं पापण गई सोय।
जो जानों हरि आवै मोरी सजनी रखती दीपक जोय।2।
लाद चल्यो टांडे को मालिक धुर ललकारा होय।
बनखण्ड में बनजारी मिल गई फेर मिलण नहीं होय।3।
गहरी नदियां नाव पुरानी तिरणा किस विध होय।
आपां आप तिरि मोरी सजनी तुही तर–तर सोय।4।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरिबिन मुक्ति न होय।
तुझ बिन मुक्ति कैसी मोरी सजनी तुही जाने तुही तोय।5।

भजन 39

भजन बिना बावरे तैनें हीरा सा जन्म गंवाया।
कभी न आया सन्तों शरना ना तैं हरिगुण गाया।।
वह वह मरा बैल की नांई, सोय रहा उठ खाया।
यह संसार हाट बनिये की सब जग सौदा आया।।
चातुर माल चोगुना कीना, मूरख मूल ठगाया।
यह संसार फूल सम्भल का, सुवा देख लुभाया।।
मारी चोंच रूई निकसी तब मूंडी धुनि पछताया।
यह संसार माया का लोभी ममता महल बनाया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछु ना आया।।

भजन 40

कछु लेना न देना मगन रहना।।टेक।।
पांच तत्व का बना पींजरा, जामैं बोले मेरी मैंना।
तेरे पिया तेरे घर में बसत हैं, सखी खोलकर देखो नैना।।
गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिया से मिले रहना।
कहत कबीर सुनो भाई साधो गुरू के चरण में लिपट रहना।।

भजन 41

मन लागो मेरो यार फकीरी में।
जो सुख पावो राम भजन में, सो सुख नांहि अमीरी में।।
भला बुरा सबका सुनी लीजै, कर गुजरान गरीबी में।।
प्रेम नगर में रहनि हमारी, भलि बनी आई सबूरी में।।
हाथ में कुंडी बगल में सोटा, चारों दिसी जागीरी में।।
आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहा फिरत मगरूरी में।।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिले सबूरी में।।

भजन 42 (राग झिझोंटी ताल – दादरा)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो, सकल लोक जोई।।
भाई छोड्या बन्धु छोड्या, छोड्या सगा सोई।
साधु संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई।।1।।
भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई।
अंसुवन जल सींच सींच, प्रेम बैलि बोई।।2।।
दधि मथ घृत काढ़ि लियो, डार दई छोई।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई।।3।।
अब तो बात फैल पड़ी, जाणें सब कोई।
मीरा ईम लगण लागी होनी होय सो होई।।4।।

भजन 43

म्हानें चाकर राखो जी। गिरधर लाल चाकर राखोजी।टेक।
चाकर रहसूं बाग लगासूं, नित उठ दर्शन पासूं।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, गोविन्द लीला गासूं।।1।।
चाकरी में दर्शन पाऊं, सुमिरन पाऊं खरची।
भाव भगती जागीरी पाऊं, तीनों बातां सरसी।।2।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गले बैजन्ति माला।
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।।3।।
ऊंचे ऊंचे महल बनाऊं विच विच राखूं बारी।
सांवरिया के दर्शन पाऊं, पहर कुसुम्बी साड़ी।।4।।
जोगी आया जोग करन कूं, तप करनें संन्यासी।
हरि भजन कूं साधू आये वृन्दावन के वासी।।5।।
मीरा के प्रभु गहिर गंभीरा, हृदे रहोजी धीरा।
आधी रात प्रभु दर्शन दीन्हों, जमुना जी के तीरा।।6।।

भजन 44

दर्शन तो गिरधारी, भिखारी तेरे द्वार खड़ा।
कब से खड़ा हूं आस लगाये, झोली खाली रह न जावे।
आया हूं शरण तुम्हारी, भिखारी तेरे द्वार खड़ा।दर्शन दो.....
तुम्हें छोड़ मैं किस दर जाऊं किसको अपना हाल सुनाऊं।
दुश्मन हो गया सारा जमाना, विप्ता हरो त्रिपुरारी।भि.....
पूर्ण कर दो मन की आशा, मैं हूं तेरे दर्शन का प्यासा।
मेरे दुःख का करो तुम नाशा, दीक्षा दो बनवारी,
भिखारी तेरे द्वार खड़ा। दर्शन दो.....।।

भजन 45

मैं सादर शीश नवाता हूं, भगवान तुम्हारे चरणों में।
कुछ अपनी विनय सुनाता हूं, भगवान तुम्हारे चरणों में।।
जिस–जिस योनी में भ्रमण करूं,जो जो शरीर मैं ग्रहण करूं
वहां भंवरा सम गुंजार करूं, भगवान तुम्हारे चरणों में।
घर में या वन में देह रहे, मन में पद पंकज नेह रहे।
बढ़ता निर्मल नव नेह रहे, भगवान तुम्हारे चरणों में।।
तेरे ही गुण का हो कीर्तन, भूले न तुम्हें निशि दिन पल छिन।
तन मन धन मेरा हो अर्पण, भगवान तुम्हारे चरणों में।।
धन सम्पति की कुछ चाह नहीं, परिवार छूटे परवाह नहीं।
पतितों का हो कल्याण यहीं, भगवान तुम्हारे चरणों में।।

भजन 46

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान।
किसनें जानी तेरी माया, किसनें भेद तुम्हारा पाया।।
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान।।
तूं ही जल में तूं ही थल में, तूं ही हर डाल की हर पातन में
तूं ही दिल में मूर्तिमान। तेरे पूजन.....
तूनें राजा रंक बनाया, सिंहासन पर भिक्षुक बैठाया।
तेरा रूप अनूप महान।।
झूठे जग की झूठी माया, मन मूरख काहे भरमाया।

भजन 47

बने रहे अलमस्त राम की पी लेना बूंटी।
काय का घोटा काहे की कुंडी काय से रगड़ो यह बूंटी।
काय का रूमाल बनाया, काय से छानों यह बूंटी।।1।।
सत्य का घोटा धर्म की कुंडी राम नाम रगड़ो बूंटी।
अखियन का रूमाल बनाया, प्रेम से छानों यह बूंटी।।2
ब्रह्मा नें पी लै विष्णु नें पीलै, शंकर नें पी यह बूंटी।
हनुमान नें ऐसी पीलै, सोनें की लंका लूटी।।3
ध्रुव नें पी प्रहलाद नें पी लै तुलसी नें पी यह बूंटी।
विप्र सुदामा नें ऐसी पी लै सोनें की बन गई कुटी।।4
धन्ना नें पी भक्ता नें पी लै मीरा नें पी यह बूंटी।
ब्रह्मानन्द नें ऐसी पी लै ब्रह्म ब्रह्म से लव लूटी।।5

भजन 48

सच्चिदानन्द तूं नित्य निर्द्वन्द्व,
तूं जीव मान बन गया देह में तूं दीवाना।।टेक
अपनें अज्ञान में तूं भरमाया।
शेर होकर भी भैं भैं मचाया।
मेरा घर बार हैं, मेरा परिवार हैं।
ये खजाना सीप को चांदी में तूं लुभाना। सच्चिदानन्द
होके अविनाशी जन्मा मरा हैं, रज्जू में सर्प देख डरा हैं।
यहि भ्रम मूल हैं तुझ को ही शूल हैं,
जो भुलाना, झूठे सपनें को हैं सत्य माना।। सच्चिदानन्द
तेरी माया ही तुझको रीझाती,
खोल रच रच के तुझको दिखाती।
खेल में खेलता नित्य दुःख झेलता न अघाता,
चाहें मरूस्थल के जल में नहाना।सच्चिदानन्द.
देह मानव की हीरा सी पाई,
करले विज्ञान सुन्दर कमाई,
शुद्ध दर्पण बना रूप लख अपना जो पुराना,
चाहे जो पूर्ण आनन्द पाना। सच्चिदानन्द.....
कर जीवन का कल्याण।। तेरे पूजन.....

भजन 49

मेरा सत् चित् आनन्द रूप कोई कोई जानें रे।।टेक।।
मन वाणी का मैं हूं द्रष्टा। द्वेत वचन का मैं हूं सृष्टा।।
अनुभव से सिद्ध अनूप कोई कोई जानें रे। मेरा सत्.....
पंच कोष से मैं हूं न्यारा। तीन गुणों से भी मैं न्यारा।
मैं हूं साक्षी भूप कोई कोई जानें रे। मेरा सत्.....
जन्म मरण मेरे धर्म नहीं हैं। पाप पुण्य मेरे कर्म नहीं हैं।
अज निर्लेपी रूप कोई कोई जानें रे। मेरा सत्.....
सूर्य चन्द्र में तेज हैं मेरा। अग्नि में भी ओज हैं मेरा।
मैं हूं पूर्ण स्वरूप कोई कोई जानें रे। मेरा सत्.....
तीन लोक का मैं हूं स्वामी। घट घट व्यापक अन्तरयामी।
जूं माला में सूत कोई कोई जानें रे।। मेरा सत्.....
ज्ञान प्रकाश निज रूप पहचानों। जीव ब्रह्म में भेद न मानों।
मैं हूं ब्रह्म स्वरूप कोई कोई जानें रे।।सत चित्.....

भजन 50

टेक – बंगला भला बना दरवेश जामें नारायण परवेश।
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा।
छतीसों की छात बनाकर चिन गया चिनने हारा। बंगला.
इस बंगले के दश दरवाजे, बीच पवन का थंबा।
आवत जावत कोऊ न जानें देखो बड़ा अचम्भा।।बंगला.....
इस बंगले में चोपड़ मांडी खेले पांच पच्चीस।
कोई तो बाजी हार चला कोई चला जुग जीत।।बंगला.....
इस बंगले में पातर नाचे मनुवा तान लगावे।
सुरत निरत के पहर घुंघरू राग छत्तीसों गावे।।बंगला.....
कहे मछन्दर सुन भोले गोरख जिन यह बंगला गाया।
इस बंगले के गानें वाला फेर जन्म नहीं आया।।बंगला.....

भगवान का चरणामृत लेनें का मन्त्र–
अकाल मृत्यु हरणं, सर्व व्याधिविनाशनम्।
विष्णु पादोदकम् पित्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

भजन 51

सासरे मैं ना जाऊंगी मुझे गुरू मिले रविदास।टेक।
एक बेल के दो तूबरी एक ही उनकी जात।
एक तो गलिन में रूड़ती डोले एक सत्गुरू के हाथ।।सासरे.
एक मिट्टी के दो बर्तन हैं एक ही उनकी जात।
एक में घलते माखन मिश्री एक धोबी के घाट।।सासरे.....
आयो गयो की पहनी गांठे बैठे यो सरे बाजार।
भूखों को तो भोजन देता आखिर हैं जात चमार।।सासरे...
काख में से रांपी काढ़ी चीरा अपना गात।
चार युगों के दीखे जनेऊ आठ गांठ नव तार।।सासरे.....
अपनें महल से मीरा उतरी घट ही में गंगा न्हाय।
पां पूजूं इस रविदास के अमर लोक लिये जाय।।सासरे....

भजन 52

संगत करले साध की, जासें उपजेंगे आत्मज्ञान।टेक।
जल देखें शुचि उपजे साधु देखो ज्ञान।
माया देखे लोभ उपजे तिरिया देखे काम।।1।संगत.....
साधु मिलन जब चालियो तज माया अभिमान।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे त्यों त्यों यज्ञ समान।।2।।संगत...
साधु हमारी आत्मा हम संतन की देह।
रोम रोम में ऐसा रम रहा ज्यों बादल में मेह।।3।।संगत..
साधु माई बाप हैं साधु भाई और बन्धा।
साधु मिलावै राम तै काटे यम के फंद।।4।।संगत.....
एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आध।
तुलसी संगत साधु की हरे कोटि अपराध।।5।।संगत.....

न सुखम् देवराजस्य, न सुखं चक्रवर्तिनः।
यत्सुखं वीतरागस्य, मुनिरेकान्त वासिनः।।
पानी ढूंढ़े तरंग को, कपड़ा ढूंढ़े सूत।
जीव ढूंढ़े ब्रह्म को, तीनों उत के उत।।

भजन 53

घुल जाओ चंदन रंग केसर जु, हमारी सुरता लगी परमेश्वर सूं।
पनवाड़ी पल पल में बदले, मैं बदलूं मेरे मन मे यूं।
सोवनी सिकर में ताली लागी , सुरता विलम्ब रही सासा सूं।
कमोदरी का जल पर वासा, सुरता लगी चन्द्रमा सूं।।
उग्या भान हुआ उजियाला, देहि में दाता दरस्या न्यूं।
माली के नें बाग लगाया, कली–कली रंग फूल्या यूं।।
भंवर वासना लिवी फूलों की, मस्त भयो मनहर में यूं।
बाजीगर नें बाजी रचदी, लोग अचम्भे आया क्यों ।।
लिखमा भणत गुरूजी के शरणें, ठाया करो मन दुनिया सूं।

भजन 54

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पीछे, मधुवन मोहि पठायो।
चार पहर बंशीवट भटक्यो, सांझ परे घर आयो।।
मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।
तूं जननी मति की अति भोरी इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजि हैं, जानि परायो जायो।।
यह ले अपनी लकुट कमरिया, बहुत ही नाच नचायो।
सूरदास तब विहंसि जसौदा, लै उर कंठ लगायो।।

भजन 55

हर–भज–हर भज हीरा परख ले, समझ पकड़ नर मजबूती।
अटल तखत पर खेलो हंसला सतगुरू और वार्ता झूठी।1।
धरहर – धरहर मेहा गाजे, सोहं सोहं क्या होती।
त्रिवेणी के रंग महल में हंसा, चुग गया निज मोती।2।
सत सुमरन का शेल बनाले, ढ़ाल बनाले धीरज की।
काम क्रोध नें मार हटादे, जद जांणूं थारी रजपूती।3।
इस काया में पांच चोर हैं, जिनकी पकड़ो सिर चोटी।
पांचन मार पचीसन बसकर, जद जानूं थारी बुद्धि मोटी।4।
पकी धड़ी का तोल बनाल्यो, काण न राखो एक रती।
कह मछंदर सुन जति गोरख, अलख लखासो खरा जति।5।

भजन 56

देखो रे लोगों भूल भूल्लया का तमासा ।टेक।
नहीं किसी का जाना आना नहीं किसी का नाता।
नहीं किसी की बहन भानजी नहीं किसी की माता।1।
दैहली तक त्रिया का नाता, पोली तक तेरी माता।
मरघट तक तो चले बराती, हंस अकेला जाता।2।
चोंसी पहरी पैंसी पहरी, ओढ़ी मल–मल खासा।
इस काया पर इतर लगाया, अन्त खाक में वासा।3।
कोड़ी–कोड़ी माया जोड़ी जोड़ी लाख पचासा।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, संग चले न मासा।4।

भजन 57

राम कहनें का आनन्द जिसकी जीभ पर आ गया।
जीवन मुक्त हो गया चारों पदार्थ पा गया।
लूटा आनन्द प्रहलाद नें इस नाम के प्रताप से।
नरसिंह हो दर्शन दिया तीनों लोक में यश छा गया।।
शिबरी थी कौम की भीलनी बड़े प्रेम से सुमरन किया।
परमात्मा घर आन उनके हाथ से फल खा लिया।।
क्या भक्ति निर्मल छा रही इसे देखकर संसार में।
अब के आनन्द तुलसीदास यश बरसा गया।।

भजन 58

हे प्रभुजी थारी अनमिट माया हो ।टेक।
हमारो अवगुन चित न धरो।
समदर्शी हैं नाम तुम्हारो चाहो तो पार करो।।हमारे.....
इक नदिया इक नार कहावत मेलो नीर भरो।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो।।हमारे..
एक लोहा पूजा राखे, एक घर बधिक परो।
ऊंच नीच पारस नहीं जानें कंचन करत खरो।।हमारे.....
अबकी बेर मोय नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरो।
यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो।।हमारे.....

भजन 59

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक जो निभाया हैं आगे भी निभा लेना।
दलबल के साथ माया घेरे जो मुझको आकर।
तो देखते न रहना, झट आके छुड़ा लेना।
सम्भव हैं झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊं।
पर नाथ तुम कभी मुझको भूल न जाना।

भजन 60

दोहा – कबीरा प्रेम रस जिन पिया अंतरगत लौ लाय।
रोम रोम में रम रहा और अमल क्या खाय।।
कोई पीवो रामरस प्यारे रे।टेक।
गगन मण्डल में अमृत बरसे पीलो सांसम सासा रे।
ऐसा मंहगा अमी बिकत हैं छै रती बारह मासा रे।।काई.
जो पीवे सो जुग जुग जीवे कबहुं न होत विनासा रे।
इस रस कारण हुए नृप जोगी छोड़ो भोग विलासा रे।।कोई.
सहज सिंहासन बैठे रहते भस्म लगाये उदासा रे।
गोपीचन्द भरतहरि रसिया और कबिरा रह दासा रे।।कोई.
गुरू दादू प्रसाद को चुनके पाया सुन्दर दासा रे।

भजन 61

दोहा – मोहिनी मूरत श्याम की हृदय रही समाय।
लाली मेंहदी पांत ज्यों देख लखी न जाय।।
दलाली हीरा लालन की म्हारे सद्गुरू दी हैं बताय।टेक
लाल पड़ा मैदान में कीच रहा लिपटाय।
निगुरे निगुरे लंघ गयो जी सुगुरे लिया हैं उठाय।।दलाली.
सबें पले लाल हैं सबही साहुकार।
गांठ खोल परखा नहीं रे इस विध आ गई हार।।दलाली..
इधर से अंधा आवता, उधर से अंधा जाय।
अंधे से अंधा मिला जी रस्ता कौन बताय।।दलाली.....
लाली लाली सब कहे लाली लखी न कोय।
लाली लखी कबीर नें जो मुक्ति पाई सोय।।दलाली.....

भजन 62

हालो म्हारी साहियां ए, हालो म्हारी साहियां ए जाम्भोजी रे मेले में।
आज रो समैयो म्हारा जम्भेश्वर रो मेले चालोए।।
सोना रे रूपा री साहियां ईंट पड़ायसां।
हरि रो मन्दिरियो चीणांयसां ए।।जाम्भेजी.....
कुं कुं रे केशर री साहियां गार पड़ायसां,
मन्दिरियो लीपायसां ए ।। जाम्भेजी.....
गंगा रे यमुना रो सहियां नीर मंगायसां,
गुरूजी नें नहवायसां ए ।। जाम्भेजी.....
गोरी गायां रो सहियां दूध मंगायसां,
गुरू जी नें पीलायसां ए ।।जाम्भेजी.....
हींगलू पागां रो सहियां ढ़ोलियो ढ़लायसां,
गुरू जी नें पोढ़ायसां ए।। जाम्भेजी.....

भजन 63

आछो मन्दिर जम्भेश्वर जी महाराज का।
ओला रे दोला जाल खेजड़ा बीच में बणौ बड़साल।
आछो चिणायो चोक जाम्भेजी रो।
मकराणा सूं रामा भाटो मंगाय चोक हजारी चिणाव।
नारेलांरी रामा नीवीं रे देराव, खोपरियां का आलिया रखाय।
चोक हजारी.
खारकियां री रामा खूंटी रे ठैराय, जलेबी री जाली रे कराय।
मन्दिर आछो लागे महाराज जाम्भेजी रो।
देश देश रा आवे मानवी लुय लुय लागे पांव।
ऊंट छल छल आखा रा आवे, घृत पड़े रे मांय।
पीली पीली पांख्या रा आवे परेवा,
ए घुट घुट चुगेला रे मोठ।।मन्दिर आछो.....
सोनें सूं मढ़ाऊं थारी चांच रूपा सूं मंढ़ाऊं थारा पांख।
घुट घुट चुगेला मोठ, मन आछो लागे मन्दिर जाम्भेजी रो।

भजन 64

शरणागति

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालु भगवन।
संभालो बिगड़ी दशा हमारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
न हममें बल हैं न हममें शक्ति, न हममें साधन हैं न हममें भक्ति।
तुम्हारे दया के हम हैं भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम हो पिता तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम हैं पुजारी, दया करो हे दयालु भगवन।।
अनेक अधमों को तुमनें तारा, अनेक भक्तों को हैं उबारा।
हमें उबारो तो हम भी जानें, दया करो हे दयालु भगवन।।
तुम्हीं हो मात तुम्हीं पिता हो, तुम्हीं बन्धु सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो साधक के दुःख हारी, दया करो हे दयालु भगवन।।

भजन 65

दुःखियों की पुकार

दशा दुःखियों की हे भगवान, बना दोगे तो क्या होगा।
उन्हें सन्मार्ग का मार्ग, बता दोगे तो क्या होगा।।
अजामिल गीध गणिका को, अगर पावन बनाया हैं।
उसी पावन में पतितों को, मिला लोगे तो क्या होगा।।
उतारा भार तुमनें हैं, जगत में प्रेमी भक्तों का।
मेरा भी भार हे भगवान ! उतारोगे तो क्या होगा।।
सुनाया ज्ञान गीता का, मिटाया मोह अर्जुन का।
मेरा भी मोह हे भगवन ! मिटा दोगे तो क्या होगा।।
जगत में लोग यह कहते हैं, तूं मेरा हैं तूं मेरा हैं।
मुझे चरणों का अब सेवक, बना लोगे तो क्या होगा।।
जिन चरणों नें तुम्हारे, अधम पापी उबारे हैं।
उन्हीं चरणों में साधक को, मिला लोगे तो क्या होगा।।

भजन 66

शरणागति

मन भजलो अब तुम नाम यही, श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्।
मानव जीवन का सार यही,श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्।।
जब ग्राह नें गज को पकड़ लिया,तब किसी नें नहीं था साथ दिया।
तब गज नें करी पुकार यही, श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्।।
जब चीर दुःशासन नें खींचा, तब आंखों को सब नें मींचा।
तब द्रोपदी नें करी पुकार यही, श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्।।
जब रावण नें अत्याचार किया,सुर,नर,मुनियों को दुःख दिया।
तब देवों नें टेर लगाई यही,श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्।।
जब रावण नें लात उठाई थी, वह लात विभीषण खाई थी।
तब भक्त नें करी पुकार यही,श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्
जग में जो कुछ भी पाओगे, सब छोड़ यहीं पर जाओगे।
सद्गुरू का हैं ज्ञान यही, श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्।।
अब अपना कुछ भी मत मानों, परम तत्व को तुम पहिचानों।
साधक का हैं आधार यही, श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्।।

भजन 67

रे मन मूरख सोच जरा, तूं प्रभु की शरण न आयेगा।
अन्त समय कोई साथ न जाये, यमपुर बांधा जायेगा।।
सुख वैभव अधिकार पाकर, नर अभिमान बढ़ायेगा।
जो कुछ पाया तूंनें जगत में, साथ कछु नहीं जायेगा।।
लोभी बनकर धन संचय से, लाख करोड़ कमायेगा।
अन्त समय सब यहीं रहेगा, संग न धेला जायेगा।।
कामी बनकर झूठे सुख में, जो आनन्द मनायेगा।
शक्ति क्षीण हो जानें पर तूं, अन्त समय पछतायेगा।।
मोही बन कर सुत दारा से, ममता मोह बढ़ायेगा।
सुख के बदले जानें कितना, अन्त में दुःख उठायेगा।।
सन्त संग में बैठ ले साधक, दिव्य ज्ञान तूं पावेगा।
सुर दुर्लभ सुख मिले जगत में, अन्त अमरपुर जायेगा।।

भजन 68

हरि का नाम सुमर नर प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिये।
पाकर मानुष तन दुनिया में, मुफ्त गुमाना ना चाहिये।।टेक।।
झूठ कपट अरू पाप करम से, धन को कमाना ना चाहिये।
पर नारी से कभी भूलकर, प्रीत लगाना ना चाहिये।।1।।
देकर के विश्वास किसी को, फिर हट जाना ना चाहिये।
दुर्जन नर को अपने पास में, कभी बिठाना ना चाहिये।।2।।
साचे मित्र से दिल की कोई, बात छिपाना ना चाहिये।
अपनें घर का भेद कभी, दुश्मन को बताना ना चाहिये।।3।।
आमद से पैसे का ज्यादा, खरच बढ़ाना ना चाहिये।
लोक बड़ाई में कर्जा कर, धन को लुटाना ना चाहिये।।4।।
वेद शास्त्र के धर्म सनातन, को बदलना ना चाहिये।
नये नये पन्थों की बातें सुनकर फंसना ना चाहिये।।5।।
आश पराई बुरी हमेशा, मन में लगाना ना चाहिये।
अपना पुरूषार्थ करनें में दिल शरमाना ना चाहिये।।6।।
पुण्य कर्म करके पीछे, मन में पछताना ना चाहिये।
पाप कर्म की तरफ कभी मन को, ललचाना ना चाहिये।।7।।
जहां न आदर होय कभी, उस घर में जाना ना चाहिये।
अपनें घर में आये जन के, दिल को दुखाना ना चाहिये।।8।।
बिना मालिक के हुक्म किसी की वस्तु उठानी ना चाहिये।
घर के झगड़े कारण, राज सभा में जाना ना चाहिये।।9।।
बिना जानें परिणाम किसी कारज को बनाना ना चाहिये।
अपना करना भरना दोष दूजे को लगाना ना चाहिये।।10।।
रण भूमि में जाकर मरनें से डर पाना ना चाहिये।
विपत पड़े जो आय कभी मन में घबराना ना चाहिये।।11।।
ईश्वर अंश जीव हैं सारे, दुःख उपजाना ना चाहिये।
अपनें गुरू अरू मात पिता से, कपट चलाना ना चाहिये।।12।।
परमेश्वर हैं तन में बन में खोजन जाना ना चाहिये।
कर सत्संग विचार सदा दिल से, विसारा ना चाहिये।।13।।
ये इन्द्रियां दुश्मन हैं तेरी, वश में आना ना चाहिये।
ज्ञान विवेक योग मारग से, दिल को हटाना ना चाहिये।।14।।
सब जग मिथ्या जान धरो नित, ध्यान डुलाना ना चाहिये।
ब्रह्मानन्द को पाकर फिर, भव में भरमाना ना चाहिये।।15।।

भजन 69

मिलता हैं सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में।
ये विनती हैं पल–पल छिन्न–छिन्न रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
चाहे बैरी कुल संसार बनें, चाहे जीवन मुझ पर भार बनें।
चाहे मौत गले का हार बनें, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे कांटों पर मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
चाहे कष्टों नें मुझे घेरा हो, चाहे चारों और अन्धेरा हो।
पर पग नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।
मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह अरू शाम रहे।
बस काम आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।।

कीर्तन 70

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये,
जेहि बिधि राखे राम तेहि विधि रहिये।टेर।जय जम्भेश्वर.3
मुख में हो राम नाम गुरू सेवा हाथ में,
तूं अकेला नाहीं प्यारे राम तेरे साथ में।
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये,
जेहि विधि राखे राम तेहि विधि रहिये।।जय जम्भेश्वर.....3
किया हैं अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा,
होगा तो वही जो प्यारे श्री राम जी को भायेगा।
आसा फल त्याग, शुभ काम करते रहिये।।जय जम्भेश्वर...3
जिन्दगी की डोर सोंप हाथ दीनानाथ के,
महलों में निवास दे या झोंपड़ी में वास दे।
निरविवाद धन्यवाद राम राम कहिये।।जय जम्भेश्वर.....3
आशा एक राम जी की दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक राम जी से दूजा नाता तोड़ दे।
साधु संग राम रंग अंग अंग रंगिये।।जय जम्भेश्वर.....3
काम रस त्याग प्यारे राम रस पीजिये,
मिलेगा आनन्द तो मुक्ति पद लहिये।
नारद जी का कहना भाई, भूल मत जाइये।जय जम्भेश्वर...3

भजन 71

मरहम हो सोई जानें भाई साधो ऐसा देश हमारा हैं।टेक
बिन बादल बिजली वहां चमके बिन सूरज उजियारा हैं।
बिना नयन वहां मोती पुरोवे बिना स्वर शब्द उच्चारा हैं।1।
भंवर गुफा में अनहद बाजे मुरली बीन सितारा हैं।
निर्मल बूंद मिली दरिया में नहीं मीठा नहीं खारा है।2।
जात वर्ण वहां सूझत नाहीं ना वहां वेद प्यारा हैं।
वहां जाय ब्रह्मा बन बैठे कहन सुनन से न्यारा हैं।3।
कहत कबीर सुनो भाई साधो पहुंचेगा पहुंचन हारा हैं।
इस पद को जो कोई समझत बुझत अलख लखे सोई प्यारा है।4।

भजन 72

मोकूं कहां ढूंढ़े बन्दा मैं तो तेरे पास में।।टेक
ना मन्दिर में ना मस्जिद में ना काशी कैलाश में।
पुरी – द्वारिका हम नहीं रहत क्यूं फिरता तलाश में।।1
ना बस्ती मैं ना जंगल में ना मैं गुफा निवास में।
पवन तेज पृथ्वी में नाहीं नहीं जल आकाश में।।2
ना मैं मूंड मुंडाये मिलता ना तीरथ के वास में।
योग यज्ञ तप में नाहीं नहीं व्रत उपवास में।।3
मूरख को मैं मिलता नाहीं मेरे भक्त का दास मैं।
वचन हमारा सत कर मानों मैं बसता विश्वास में।।4
गला पराया जो नर काटे सुन कहता अब खास में।
उसे दर्श स्वप्न में नांहीं वसे नरक के वास में।।5
मेरे अंश से जीव बने सब मत हो राजी मांस में।
बदला बैर छूटता नांही क्यों मिलता हैं नाश में।।6
मारो तो या मन को मारो मोय सुमरो सास उसास में।
गगन मंडल में कुटी हमारी झिलमिल जोति आभास में।।7
कर साधन सिद्धाई साधो चाहे उड़ो आकाश में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो जो कोई खोजे जास में।।8

भजन 73

जय प्रभु गोविन्द दीन दयाल,
प्रभु जी हमको करो निहाल।
सत्य सन्तोष शील हमें दीजे,
दोष हमारे सब हर लीजे।
दया नम्रता मन में आवे,
मन भोगों में कभी न जावे।
पर पीड़ा से चित हटाओ,
पाप कर्म से हमें बचाओ।
चित निर्मल प्रभु करो हमारा,
भजन करे नित्यप्रति तुम्हारा।
जब तक कृपा तुम्हारी न होवे,
तब तक वृथा जन्म नर खोवे।
माया के बस पड़ा भुलाना,
बार बार दुःख पावै नाना।
बिन सन्तोष न सुख कहीं होवे,
भटक भटक नर जीवन खोवे।
अन्त समय रो रो पछतावे,
गया वक्त फिर हाथ न आवे।

दोहा — बार बार विनती करें, सुनिये दीन दयाल।
कृपा दृष्टि करके प्रभो, बेगहि करो निहाल।।
शरीर साधन के लिये, जैसे हैं जल पान।
वैसे ही मन के लिये, हैं सत्संग प्रमाण।।

छपइया —

सूवा सुफरा बोलिये, विपरा बोलो कांय।
छंदा जहांरा छाइये, जिणरे बसिये गांव।।
जैसे कूआ जल बिना, खिणाज कैसे काम।
मिनखा देही पायकर, भजो नहीं भगवान।।
दीसण लागा रूंखड़ा, नेड़ो आयो गांव।
परशा विलम्ब न कीजिये, लीजै हरि को नाम।।

भजन 74

सुने री मैंनें निर्बल के बलराम।
पिछली साख भरूं सन्तन की, अड़े संवारे काम।।
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो, नेक सरयो नहीं काम।
निर्बल ह्वै बलराम पुकारयो, आये आधे नाम।।
सुनी री मैंनें.....
द्रुपद सुता निर्बल भई ता दिन, तजि आये निज धाम।
दुशासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये श्याम।।
सुन री मैंनें.....
अपबल तपबल और बाहुबल, चौथो हैं बल दाम।
सूर किशोर कृपा तें सब बल, हारे को हरि नाम।।
सुने री मैंनें.....

भजन 75

मेरे सतगुरु मन ऐसा बनजारा।टेक।
कच्चा कोट बना चोफेरा कारीगर चेजारा,
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा।1।
देखा बाग–बाग विच माली सींच बनाया क्यारा,
भंवर वासना ले फूलन की कली–कली रस न्यारा।2।
डूंगर ऊपर बनी डूंगरी ऊपर भंवर गुंजारा,
वह भंवरा मेरे ताप्या दरशन देवे दिदारा।3।
गंगा न्हाय गोमती न्हाया, न्हाया था विच धारा,
उस धारा की जोति जगत हैं परसे परसन हारा।4।
माता पिता बन्धु सुत दारा झूठा जगत पसारा,
साधु संत से मिलकर चलना और जगत से न्यारा।5।
नाथ गुलाब मिला गुरू पूरा दीन्हा ज्ञान अपारा,
भानीनाथ शरण सत्गुरू की अमर नगर घर म्हारा।6।

कवित –

श्री जंभगुरू जगदीश, ईश नारायण स्वामी।
तिहुं तृलोकि रा देव सकल घट अन्तर्यामी।।
पेट पूठ नहीं ताही सकल को सन्मुख दरसै।
तीन ताप मिट जाय, जेहि पद पंकज परसै।।
अलख अगोचर देव हैं, सत्चित आनन्द भेव।
सुरजनदास उस देव की, प्रीत करो नित सेव।1।
नवण करूं गुरू जंभ को, निऊं निर्मल भाव।
कर जोड़े बन्दो चरण, शीश निवाय निवाय।।
निवणी खिवणी बिनती, सबसूं आदर भाव।
कह केशो सोई बड़ा जिहि में घणा समाव।।
आम फलै नीचो निवै, ऐरंड ऊंचो जाय।
नुगुर सुगुर की पारखां, कह केशो समझाय।।2।।

साखी 1

आवो मिलो जुमलै जुलो, सिंवरो सिरजणहार।
सतगुरू सतपन्थ चालिया, खरतर खण्डाधार।।
जम्भेश्वर जिभिया जपो भीतर छोड़ विकार।
सम्पति सिरजणहार की, विधिसूं सुणो विचार।।
अवसर ढ़ील न कीजिये, भले न लाभे वार।
जमराजा वासे वह तलबी कियो तैयार।।
चहरी वस्तु न चाखिये उर पर तज अहंकार।
बाड़े हूंता बीछड़ा जांरी सतगुरू करसी सार।।
सेरी सिवरण प्राणियां अन्तर बड़ो अधार।
पर निन्दा पापां सीरे भूल उठावै भार।।
परलै होसी पाप सूं मूरख सहसी भार।
पाछै ही पछतावसी पापां तणी पहार।।
ओगण गारो आदमी इला रै उर भार।
कह केशो करणी करो पावो मोक्ष द्वार।।

साखी 2

श्री जम्भ चरित्र ध्वनि – प्रातः गाई जाने वाली

आये म्हारे जंभ गुरू जगदीश, सुर नर मुनि हरि नैं नावे सीस।।

सांयकाल–गुरू आप समराथल आये हो, म्हारे सन्तों के मन भाये हो।।

लोहट घर अवतारा हो, ऐतो धन धन भाग हमारा हो।

हरि हरि धन धन भाग हमारा हो ।। 1 ।।

अलख निरंजन आये हो, ऐतो म्हारे सन्तों के मन भाये हो।हरि–हरि ।2।

घट – घट मांय बिराजे हो, ऐतो सरस शब्द धुनि गाजे हो।।हरि–हरि।3।

जांके चरण कोई ध्यावे हो, ऐतो चार पदार्थ पावे हो।। हरि–हरि ।4।

समराथल आसण साजे हो, ऐतो झिगमिग जोत प्रकाशे हो।।हरि–हरि ।5।

नंद घरे गऊवां चराई हो, ऐतो नख पर गिरवर धारि हो।।हरि–हरि।।6।।

विराट रूप अखण्डा हो,ऐतो जाके रोम कोट ब्रह्मण्डा हो।हरि–हरि ।7।

इस धुन को कोई गावे हो,ऐतो बास बैकुण्ठ पावे हो।।हरि–हरि ।।8।।

जंभ गुरू की आशा हो, ऐतो यश गावै गंगादासा हो।हरि–हरि ।।9।।

दोहा – बन्दो श्री जंभदेव को, जिनकी ज्योति अपार।

जग कारण तारण सकल, सो हैं इष्ट हमार।।

.....दोहा.....

अड़वो चुगे न चुगणदे माणस की उणियार।

वील्ह कह रे भाइयां सूम बड़ो संसार।।

साखी 3

जीव के काजे जुमलै जाइये, कीजे गुरू फुरमाइये।
सुणिये ज्ञान कटे तन कषमल ज्ञान सरोवर न्हाइये।।
श्री पति सिंवरो सदा सुखदाता जाय लीजै शरणाइये।
ऊधो भक्त हुवो अपरंपर जो जप तो मह माइये।।
रावण सांसे ओले आण्यां गोविन्द सा गुरू भाइये।
लोहा पांगल सुण कर सीधा सतगुरू हुआ सहाइये।।
सिकन्दर यो कीवी करणी दुनियां फिरि दुहाइये।
महमदखां नागोरी परच्यो चाल्यो गुरू फुरमाइये।।
सेख सदू परचे पर आण्यां मरती गऊ छुड़ाइये।
सिध साधु पैगम्बर सीधा, गिणियो ज्ञान न जाइये।।
रहो एकायन्त अन्तर खोजो भरम चुकावो भाइये।
सुमति आवै साधां संग बैठे कुमति नं आवै काइये।
गहकर ज्ञान सुणों संग साधो केशोजी साख सुणाइये।।

.....दोहा.....

नागोर के परगनें, जिले जोधपुर जाण।
पींपासर प्रकाशिया सहजे ऊग्यो भाण।।
शीश धरण धर करत हूं नमस्कार सौ बार।
इष्टदेव बाबो जंभ गुरू लीला हित अवतार।।
पींपासर परकाशिया, गुरू देवन का देव।
ब्रह्मादिक पावै नहीं अद्भुत जाको भेव।।

साखी 4

लौहट तणीजै लाज पति राखो पूरा धणी।
गऊ चरावण काज गोवल चाल्या म्हे सुण्या।
गोवल चाल्या म्हे सुण्यां नैं धणी जे आयो धाय।
भगवे बानें विष्णु आयो दर्शन दीन्हों आय।
लोहट करै छ बीणती नैं विनय सुणों सुरराय।
पुत्र दीजौ देव जी लौहट तणीजै लाज।
पति राखौ पूरा धणी।।1।।

ऐसो जनमें पूत सुन लोहट सत गुरू कहे।
जोगी महा अवधूत डर पै मत आशा सही।
डर पै मत आशा सही नैं करणी ऐती बात।
गोविन्द गोवल चालिया नैं जहां हांसलदे माय।
सखियां बैठी सामठी नें आण खड़्यो अवधूत।
हांसा नैं सत गुरू कह ऐसो जनमैं पूत।
सुण लोहट सत गुरू कह।।2।।
माता मन अणराय मोसिरजी करतार क्यों
बलि–बलि लागूं पांय झुरवै कायर मोर ज्यूं।
झुरवे कायर मोरजूं नें पुत्र बिहूंणी माय।
जमवारो ऐलो गयो नैं मैं क्या कियो जुगआय।
जब दयानिधि बोलिया नैं सुण हांसलदे माय।
नवै महीनें अवतरूं नैं घरां तिहारे आय।
हांसा नैं सत गुरू कह।।3।।
समराथल अवतार गोवल रमंतो डावड़ो।
कृष्ण सही करतार, नन्द घर होतो छाबड़ो।
नन्द घर होतो छाबड़ो नैं डावड़ो रणधीर।
वांकी बेला सदा आवै भक्त भजंनता भीड़।
गज को ग्राह घेरियो जल डूबत सुणी पुकार।
गरूड़ छोड़ प्यादे भये गज को लियो उबार।
गोवल रमन्तो डावड़ो।।4।।
कुल पुंवार तणै प्रकाश पींपासर प्रगट्यो दई।
चोचक हूवो उजास जाणैं रवि ऊगो सही।
जाणै रवि ऊगो सही नैं माता मन आनन्द।
पुत्र जनम्यो पुंवार घर गावे गुण गोविन्द।
शरणै राखो श्याम जी नैं हरिजी हर की आश।
लोहट घरां बधावणा कुल पुंवार तणै प्रकाश।
पींपासर प्रगट्या दई।।5।।

साखी 5

सही विसवा वीस, साचो गुरू समराथले।
कान्ह कुंवर नन्दलाल कृपाकर आयो भले।
कृपाकर आयो भले नैं थली चरावै थाट।
परच्या ब्राह्मण बाणियां नैं भोजग चारण भाट।
पवन छतीसों एकल सतगुरू ज्ञान दियो जगदीश।
चरण वन्द कर चलूं जे लीनों, सही विसवा वीस।
साचो गुरू समराथले।।1।।
पूरे गुरू परमोध सुपह, सुमार्ग आणियां।
शोध्या जीव सुजीव, मोक्ष मुक्त दिसताणियां।
मोक्ष मुकत दिसताणियां नैं, किया पर उपकार।
जाटां ऊपर झुकपड़ानैं, हमकले अवतार।
जंगी–जंगी परसतियां नैं, राता कलहर क्रोध।
अड़क नर परचाविया पूरे गुरू परमोध।
सुपह सुमार्ग आणियां।।2।।
प्रगटयो पूरण भाग, साचो गुरू समराथले।
दाख्यो आदू माघ, कृपा कर आयो भले।
कृपा कर आयो भले नैं धणी जे आयो धाय।
भव सागर में डूबतां नें काढ़लियो गुरू सहाय।
ओर गुरां नैं जंभगुरू में अन्तर हंसरूं काग।
परम गुरू संसार, आयो प्रगट्यो पूरण भाग।
साचो गुरू समराथले।।3।।
गुरू दीन्हीं मोक्ष बताय भव भवतो भूला फिरे।
रीज करी सुर राय, मन इच्छा कारज सरे।
मन इच्छा कारज सरै नैं, हरे जे पोते पाप।
भाव सूं भक्तां गुरू मिलिया, कलूं पधारया आप।
पींपासर प्रगट्यो दई, देवजे आयो दाय।
घर लोहट के अवतरानैं, दीन्हीं मोक्ष बताय।
भव भव तो भूला फिरे।।4।।
गुरू किया निपट निहाल, पाप करन्ता पालिया।
सत् त्रेता की चाल थरपण एकण थापिया।
थरपण एकण थापिया नैं आप दियो गुरू ज्ञान।
विष्णु भणों विश्नोइयां थे धरोजे स्वयंम्भू ध्यान।
शील सिनान सुचाल चालो, मानों हक हलाल।
जिन हरजी की बीणती, गुरू किया निपट निहाल।
पाप करंता पालिया।।5।।

साखी 6

सहस्त्र नाम संभाल प्रभाते पूजा करो।
आवागवण नैं होय जीव अभय ले ऊधरो।
जीव अभय ले ऊधरो नैं सतगुरू करे सहाय।
स्वर्ग तणों सांसो नहीं जरा मरण मिट जाय।
पाठ कर पूजो हरि नें कटै जम को जाल।
वेद व्यास कथिया, जको सहस्त्र नाम संभाल।
प्रभाते पूजा करो।।1।।
भगवत गीता गाय ग्रंथ नहीं गीता समों।
उर में चेत अजाण लख चौरासी क्यों भवो।
लख चौरासी क्यों भवो नें गीता गुण कर याद।
अर्जुन पूछी हरी कही सो संवाद संभाल।
श्याम सदा साथ रहै नैं, मन इच्छा फल पाय।
पाप सब प्रलय हुवै नैं भगवत गीता गाय।
ग्रंथ नहीं गीता समों।।2।।
भागवत पुरो पुराण सुणियां ही सांसो मिटे।
हुए अर्थ को लाभ किया कर्म सबही मिटै।
किया कर्म सबही मिटे नैं हुवे अर्थ आधार।
पारायण पुरी सुणी नैं परिछित पहुंतो पार।
शास्त्र सुण आलस न कर उर में चेत अजाण।
हरि उद्धव संवाद को नैं भागवत पुरो पुराण।
सुणयाही सांसो मिटै।।3।।
शब्दा सरीखो सार म्हारे सतगुरू आप सुणाविया।
परहर पाप विकार जोति हुवै जित जाविये।
जोति हुवै जित जावीये ने लीजै शब्द विचार।
शुद्ध मन होयकर होम कीजै हुवे मंगलाचार।
पाप सब प्रलय करो नैं मुक्ति द्यौ मुरार।
श्री वायक संभाल प्राणी शब्दां सरीखो सार।
म्हारे सतगुरू आप सुणाविया।।4।।

साखी 7

देवतणी परमोध में कस्मो समो न कोय।
सैंसो तो सारा सिरे अरू स्वर्गा में होय।
हाथ जोड़ सैंसो कहै मांगे सीख जमात।
घर आये को दीजिये सुण सैंसा यों बात।
एक बात मोसो कह्यो एक बात सौ बार।
मेरे घर को जगत् गुरू जाणें सब संसार।
आंजस कर सैंसे कही देवन आई दाय।
सतगुरू आप पधारिया पत्री लिवी उठाय।
आवाज करी हरि आवंता भोजन हो सोई लाव।
सतगुरू उभा आंगणें परखण आया भाव।
नारी सारी आंगणें कीया बैठी ठाट।
भिक्षा न घालै भावसूं ऊभा जोवे बाट।
लहणायत ज्यूं क्यों खड़्यो समझायो सौ वार।
कह्यो न मानें सामियो हैं तो किसो विचार।
जर झाली ठमको दियो नारी कियो जोर।
भनाय चला घर आपणें पत्री केरी कोर।
प्रभाते सैंसो आवीयो देवतणै देवाण।
सुण सैंसों सतगुरू कह्यो ओ सहनाण पिछाण।
ओ पटंतरा सांभलो सैंसो गयो निधाय।
मूंधे मुंह सैंसो पड़यो सांभल सकै न कोय।
साथरिया कहै देव सूं म्हारी अर्ज सुणो सुरराय।
जेथे छोड़ो हाथ सूं जड़ मूल से जाय।
उठ सैंसा सतगुरू कहैं गर्व न करो लिंगार।
जिण हरजी ऐसे कही सांच बड़ो संसार।
सैंसो तो सारा सिरे।।

साखी (राग भंवरो) 8

जां थलियां देव जी भंवरो अवतरियो जां थलिया छै गाढ़ो नूर
भक्तां रे मन चान्दणों दिलमां उग्यो सूर।।1।।
अलीयल टाली भंवरो रम रह्यो, रह्यो दिसावर छाय।
बाग बिहूंणों भंवरो क्यों रहे फूल रह्यो कुमलाय।।2।।
आवो आवो भंवरा घर चिणां आयो सांवणीयांरो मास।
भीजण लागी पांखड़ी छीजण लागो मांस।।3।।
घण गरजै दावण खिंवै चातक मने उदास।
सर छलिया सरिता बह रटत पीयास पीयास।।4।।
तोड़ो तोड़ो भंवरा पींजरो भांज करो चकचूर।
मोमण स्वर्गे नावड़या तूं कांय रहीया मंजूर।।5।।
भंवरा एक सनेसड़ो मोमणां नैं थे कहियो जाय।
पींजर नांही प्राणीयां थाई दिस लहिया होय।।6।।
हीरा बिणजो साधो मोमणों भले न चढ़िस्यां हाथ।
म्हे जपस्यां निस्तारसो रमस्यां झूलरिये रे साथ।।7।।
स्वर्गे सौरभ अतिघणी मोर रही वणराय।
चंपो मरवो केवड़ो भंवर रह्या रंगलाय।।8।।
मेलो गुरू प्रहलाद सुं मेलो हरिचन्द राय।
मेलो पांचे पाण्डवे धन्य कुन्ता दे माय।।9।।
जां बूठो तां बाहीयो जारां सुपह सुवाया खेत।
ते जन भंवरा नीपजां जारां जम्भगुरू सुं हेत।।10।।
कर सुकृत स्वर्गे गया ते जन पहुंता पार।
बीनतड़ी रामो कह म्हारी आवागवण निवार।।11।।

साखी 9

तारण हार थला सिर आयो जे कोई तरै सो तरियो जीवनैं।
जे जीवड़ा को भलपण चाहो सेवा विष्णु की करियो जीवनैं।।
मिनखा देही पड़े पुराणी भले न लाभै पुरीयो जीवनैं।
अड़सठ तीरथ एक सुभ्यागत घर आये आदरियो जीवनैं।।
देवजी री आस विष्णु जीरी संपत कूड़ी मेर न करियो जीवनैं।
रावां सुं रंक करे राजिन्दर हस्ती करै गाडरियो जीवनैं।।
ऊजड़ वासा वसे उजाड़ा शहर करै दोय घरियो जीवनैं।
रीता छाले छला रीतावे समन्द करे छीलरियो जीवनैं।।
पाणी सुं घृत कुड़ी सूं कुरड़ा सोघीता बाजरियो जीवनैं।
कंचन पालट करै कथीरो खल नारेल गिरियो जीवनैं।।
पांचां क्रोड़या गुरू प्रहलादो करणी सीधो तरियो जीवनैं।
हरिचंद राव तारां दे राणी सत सूं कारज सरीयो जीवनैं।।
काशी नगरी मां करण कमायो साह घर पाणी भरियो जीवनैं।
पांच पांडू कुन्ता दे माता अजर घणे रो जरियो जीवनैं।।
सत के कारण छोड़ी हस्तिनापुर जाय हिमालय गरियो जीवनैं।
कलियुग दोय बड़ा राजिन्दर गोपीचन्द भरथरियो जीवनैं।।
गुरू बचने जोगूंटो लियो चूको जामण मरियो जीवनैं।
भगवी टोपी भंगवी कंथा घर घर भिक्षा नैं फिरियो जीवनैं।।
खांडी खपरी ले नीसरियो धोल उजीणी नगरियो जीवनैं।
भगवी टोपी थल सिर आयो जो गुरू कह सो करियो जीवनैं।
तारण हार थलां सिर आयो जे गुरू कह सो करियो जीवनैं।
तारण हार थलां सिर आयो जे कोई तरे सो तरियो जीवनैं।।9।।

साखी (राग रामगिरी) 10

जागो मोमणों नां सोवो न करो नींद पियार।
जैसा सुपना रैन का ऐसा ओ संसार।
कहीं सुभागी आम्बो रोपियो भगवत के दरबार।
पींघ पड़ेला आम्बो सो हणी हींडे कै शुचियार।
एकणि डाली हूं चढ़ी दूजे मोमण बीर।
जिण तो डाले हूं चढ़ी तिणी घणेरी भीड़।
हाथांरो मूंदड़ों गिर पड़यो कांनारी नवरंग बीण।
काज पराया ना सरै जांह दूखे तांह पीड़।
एकण डांडे जुग गयो राजा रंक फकीर।
एक सिंघासण चढ़ि चल्या एकण बंध्या जाय जंजीर।
दुर्लभ देशां गरजीयो बूठो घटि–घटि मांहि।
बाहर थाते उबरिया भीगा मन्दिर मांहि।
छान पुराणी छज नबो चुय–चुय पड़ै मंजीठ।
लाखों इण पर चेतिया जायर बसिया बैकुण्ठ।
नाम बतायो देवजी जांसै उतरो पार।
उदोजी बोले बीणती म्हारी आवांगवण निवार।।8

साखी 11

सोलो राग खंभावची

जिभिया जपले जंभ सवेरा आज संभराथल आनन्द अपारा।टेर।
सुर तेतीसों रहत सन्मुख आगे उधोजन करत उचारा।
देवगणा सब हिल मिल गावै इन्द्र बधावा मंगलचारा।।1।।
जैसे दणीयर उदय होत हैं तीमर तूटत होत उजारा।
मुनि जन वेद पढ़त हैं ब्रह्मा धनि धनि लोहट भाग तुम्हारा।।2।।
षोडस अरूषट नरपति आये बड़े बड़े भूपति भूप भुजारा।
हर्ष भये शब्दों की धुन सुन परसत कर–कर प्रीत पियारा।।3।।
अवगत नाथ अयोध्या के पति तुम्हीं व्रजपति नन्द कुमारा।
आज समराथल आये हो स्वामी नवखण्ड पृथिवी खेल पसारा।4।
झिग मिग ज्योति विराजै शंभु कंचन नगरी अनूप की वारा।
तीन लोक जाकी महिमा गावै पावत माखण मोक्ष द्वारा।।5।।

साखी 12

जग में तो दातार बड़ो रे ओतो विधि सूं सुणों विचार
म्हारा प्राणियां रे।।टेर।।

जल जीवण ऋषि तापियो कठियारे कर धार।
बली राजा चकवै हुयो दान तणै उपकार।।1।।
रांके दत रांके दियो भाव भुजा भल भीख।
मानधाता मही ऊपरे अमर हुयो मण्डलीक।।2।।
हाथ द्वादश लूगड़ो दीन्हों हरि के हेत।
दुर्योधन दीठो दुनी, जनम्यों छत्र समेत।।3।।
एक अधोड़ी दान दियो कर पुरोहित सूं प्रीत।
संसार सुण शाको कियो, हुयो विक्रमाजीत।।4।।
श्रीपति पोख्यो बाघने, विध सूं विप्र विचार।
दान दियो राजा मोरध्वज नें, आधा अंग उतार।।5।।
सींचाण सिंवर सन्तोषियो, तन कांप्यो करधार।
अस्थि त्वचा दोनों दियो, देव कह्यो दातार।।6।।
पोहमी प्रगट बादशाह, ताश समों सें तूल।
हेतम हेतकर सौंपियो कीयो कोल कबूल।।7।।
रावण शिव नें सौंपिया, दश मस्तक दश वार।
नवग्रह रावण बांधिया, दान तणैं उपकार।।8।।
पहिले परमल सींचियो, ऊपर सींधो सींच।
साख रही संसार में, दीयो दान दधीच।।9।।
अनेक अनेक अरू ऊधरया, गिणत न आवे पार।
जिण केशव की बीणती हमारी आवागवण निवार।।10।

साखी 13

विष्णु बिसार मत जाइरे प्राणी, तो शिर मोटो दावो जीवनैं।टेर।
दिन–दिन आव घटंती जावै, लगन लिख्यो ज्यूं साहो जीवनैं।
काला केश कलाहल आयो, आयो बुग बधावो जीवनैं।
गढ़ पालटियो कांय न चेत्यो, घाती रोल भनावे जीवनैं।
भलियो हुवे सो करे भलाई, बुरियो बुरी कमावै जीवनैं।
दिन को भूल्यो रात न चेत्यो, दूर गयो पछतावो जीवनैं।
गुरू मुख मूरखा चढ़ै न पोहण, मन मुख भार उठावे जीवनैं।
धन को गरब न कर रे प्राणी, मत धणियां नें भावे जीवनैं।
हुकम धणी के पान भी डुबे, शिला तिर उपर आवे जीवनैं।
चावल उड़ेला तुस रहेला, को बाइन्दो बावे जीवनैं।
खिण एक मेघ मंडल होय बरसै खिण बाइन्दो बावै जीवनैं।
खिण एक जाय निरन्तर बरसै,खिण एक आप लखावै जीवनैं।
खिण एक राज दियो दुर्योधन, लेता वार न लावे जीवनैं।
सोवन नगरी लंक सरीखी, समंद सरीखी खाई जीवनै।
जिण रे पाट मन्दोदरी राणी, साथ न चाली साई जीवनैं।
जिण रे पवन बुहारी देतो, सूरज तपै रसोई जीवनै।
नव ग्रह रावण पाये बन्ध्या, कूवे मींच संजोई जीवनै।
वासन्दर जारा कपड़ा धोवे, कोदूं दले बिहाई जीवनै।
जर जुरवाणां संकल वन्ध्या फेरी आपण राई जीवनैं।
जिणरे साहिबजी री खबर न पाई, जातो वार न लाई जीवनै।
चान्द भी शरणें, शूर भी शरणें, शरणें मेरू सवाई जीवनै।
धरती अरू असमान भी शरणें, पवन भी शरणें वाई जीवनै।
भगवीं टोपी थल शिर आयो,जो गुरू कहे सो करियो जीवनैं।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भागभवेत।।

साखी 14

.....उमाहो.....

बाबो जंबूदीपे प्रगट्यो चोचक हुवो उजास।
आप दीठो केवल कथै जिहिं गुरू की हम आस।।
बलिजाऊं जांभेरे नाम नें साधां मोमणां रो प्राण अधार।
थे जांरे हिरदै वसो तेरा जन पहुंता पार।।टेर।।
संभराथल रली आंवणां जिण देव तणों दीवाण।
परगटियो पगड़ो हुवो निश अंधियारी भाण।।1।।
एकलवाई थल खड़यो करत सभी मुख जाप।
स्वयम्भू का सिवरण करै जो जपै सो आप।।2।।
भूख नांहीं तृसना नांही गुरू मेल्ही नींद निवार।
काम क्रोध व्यापै नहीं जिहिं गुरू की बलिहार।।3।।
भगवीं टोपी पहरंतो गहि कंथा दश नाम।
झीणी बाणी बोलंतो गुरू बरज्यो वादविराम।।4।।
सिकन्दर परमोधियो परच्यो महम्मद खान।
राव राणा निव चालिया संभल केवल ज्ञान।।5।।
मध्यम से उत्तम किया खरी घड़ी टकसाल।
कहर क्रोध चुकाय कै गुरू तोड़यो माया जाल।।6।।
सीप वसै मंझ सायरा ओपत सायर साथ।
रैणायर राचे नहीं चाह बूंद स्वान्त।।7।।
जल सारे विण माछला जल बिन मच्छ मर जाय।
देव थे तो सारो हम बिना तुम बिन हम मर जाय।।8।।
वोहो जल बेड़ी डुबंता बूझे नहीं गंवार।

केवल जंभे बाहरो म्हानें कौण उतारे पार।।9।।
हंसा रो मान सरोवरां कोयल अम्बाराय।
मधुकर कमलरै करे तेरा साधु विष्णु के नाम।।10।।
जल बिना तृसना न मिटे अन्न बिन तिरपत न थाय।
केवल जंभे बाहरो म्हानें कोण कहे समझाय।।11।।
पपीयो पीव पीव करे बोली सह पीयास।
भूमि पड़ियो भावे नहीं बूंद अधर की आस।।12।।
ठग पोहमी पाहण घणां मेल्ही दूनी भूलाय।
पाखण्ड कर परमन हड़े तहां मेरो मन न पतियाय।।13।।
गुरू काच कथीर नें राचही विणज्या मोती हीर।
मेरो मन लागो श्याम सूं गूदड़ियो गूणों को गहीर।।14।।
निर्धनियां धन वाल्हमो किरपण वाल्हो दाम।
विखियां नें वाली कामणी तेरा साधु विष्णु के नाम।।15।।
धन्यरे परेवा बापड़ा थारो वासो थान मुकाम।
चूण चुगे गुटका करे सदा चितारे श्याम।।16।।
अम्बाराय बधावणां आनन्द ठामो ठाम।
श्याम उमाहो मांडियो पोहकियो पार गिराम।।17।।
बोल्यो गुरू उमाहड़ो करमन मोटी आस।
आवागवण चुकाय के म्हानें द्यो अमरापुर वास।।18।।
अवसर मिलिया मोमणा भल मेलो कब होय।
दुःखी विहावै तुम बिना हर बिन धीर न होय।।19।।
काहे के मन कोधणी काहे के गुरू पीर।
वील्ह भणे विश्नोइयां आपां नाम विष्णु के सीर।।20।।

आरती 1

कूं कूं केरा चरण पधारो गुरू जम्भदेव, साधु जो भक्त थारी आरती करे। जम्भ गुरू ध्यावे सो सर्व सिद्धि पावे, सन्तों क्रोड़ जन्म केरा पाप झरे। हृदय जो हवेली मांही रहो प्रभु रात दिन, मोतियन की प्रभु माला जो गले। कर में कमण्डल शीश पर टोपी नयना मानों दोय मसाल सी जरे। कूं कूं केरा चरण पधारो गुरू जम्भदेव.....। सोनेरो सिंहासन प्रभु रेशम केरी गदियां, फूलांहांदी सेज प्रभु बैस्यां ही सरै। प्रेम रा पियाला थानें पावे थारा साधु जन,मुकुट छत्र सिर चंवर डुले। कूं कूं केरा. शंख जो शहनाई बाजे झींझा करे झननन, भेरी जो नगारा बाजे नोपतां घुरे। कंचन केरो थाल कपूर केरी बातियां, अगर केरो धूप रवि इन्द्र जो घुरे।। मजीरा टंकोरा झालर घंटा करे घननन, शब्द सुना सो सारा पातक जरै। शेष से सेवक थारे शिव से भंडारी ब्रह्मा से खजांची सो जगत घरे।।कूं कूं केरा. आरती में आवे आय शीष जो नवावे, निश जागरण सुने जमराज डरे। साहबराम सुनावे, गावे, नव निधि पावै, सीधो मुक्त सिधावे काल कर्म जो टरै। कूं कूं केरा चरण पधारो.।

आरती 2

आरती कीजे गुरू जम्भ जती की,भगत उधारण प्राण पति की
पहली आरती लोहट घर आये,बिन बादल प्रभु इमिया झुराए।
दूसरी आरती पींपासर आये, दूदा जी नें प्रभु परचो दिखाए।
तीसरी आरती समराथल आए, पूला जी नें प्रभु स्वर्ग दिखाए।
चौथी आरती अनूवे निवाए, बहुत लोग प्रभु पवित्र कहाए।
पांचवीं आरती ऊधो जन गावे, सो गावे अमरापुर पावे।

आरती 3

आरती कीजे श्री जम्भ तुम्हारी,चरण शरण मोही राखो मुरारी
पहली आरती उनमुन कीजे, मन बच कर्म चरण चित दीजे।।
दूसरी आरती अनहद बाजा, श्रवणे सुना प्रभु शब्द अवाजा।।
तीसरी आरती कंठसुर गावे, नवध्या भक्ति प्रभु प्रेम रस पावे।
चौथी आरती हिरदै में पूजा, आत्मदेव प्रभु और न दूजा।।
पांचवीं आरती प्रेम प्रकाशा, कहत ऊधो साधोचरण निवासा।।

आरती 4

आरती कीजे श्री महाविष्णु देवा,सुरनर मुनिजन करे सब सेवा।।
पहली आरती शेष पर लोटे, श्री लक्ष्मी जी चरण पलोटे।।
दूसरी आरती क्षीर समुद्र ध्यावे, नाभ कमल ब्रह्मा उपजाए।।
तीसरी आरती विराट अखण्डा, जाके रोम कोटि ब्रह्मण्डा।।
चौथी आरती वैकुण्ठे विलासी, काल अंगूठ सदा अविनाशी।।
पांचवीं आरती घट–घट वासा,हरि गुण गावे ऊधौ जी दासा।।

आरती 5

आरती कीजै श्री जम्भ गुरू देवा,पार न पावै बाबो अलख अभेवा।
पहली आरती परम गुरू आये तेज पुंज काया दर्शाये।
दूसरी आरती देव विराजे अनन्त कला सत्गुरू छवि छाजे। तीसरी
आरती त्रिशूल ढ़ापे, क्षुधा त्रिषा निंद्रा नहीं व्यापै।
चौथी आरती चहुं दिश परसे, पेट पूठ नहीं सन्मुख दरसे।
पांचवीं आरती केवल भगवन्ता, शब्द सुण्या यो जन पर्यन्तां।
ऊधोदास जी आरती गावे, श्री जम्भ गुरू जी को पार न पावै।

आरती 6

आरती कीजे नरसिंह कंवर की, वेद विमल यश गावे मेरे स्वामी जी की।।
पहली आरती प्रहलाद उबारे,हिरणाकुश नख से उदर बिदारे।
दूसरी आरती बावन सेवा, बलि के द्वारे पधारे हरि देवा।
तीसरी आरती वैकुण्ठ पधारे, सहस्त्राबाहु जी के कारज सारे।
चौथी आरती असुर संहारे भक्त विभीषण लंक बैठाये।
पांचवीं आरती कंस पछाड़े, गोपियां ग्वाल सदा प्रतिपाले।
तुलसी के पात जो घट घट हीरा,हरि के चरण गावे रणधीरा।

आरती 7

आरती हो जी समराथल देव विष्णु हर की आरती जय।
थारी करे हो हांसलदे माय थारी करे हो भक्त लिव लाय।
सुर तेतीसां सेवक जांके, इन्द्रादिक सब देव,
ज्योति स्वरूपी आप निरंजन कोई एक जानत भेव।विष्णु....।।
पूर्ण सिद्ध जम्भ गुरू स्वामी अवतरे केवल एक।
अन्धकार नाशन के कारण हुए हुए आप अलेख।विष्णु हर..।
समराथल हरि आन विराजे तिमिर भयो सब दूर।
सांगा राणा और नरेशा आये आये सकल हजूर।विष्णु हर.।
समराथल की अद्भुत शोभा वरणी न जात अपार।
सन्त मण्डली निकट विराजे निर्गुण शब्द उचार।विष्णु हर..।
वर्ष इक्यावन देव दया कर कीन्हों पर उपकार।
ज्ञान ध्यान के शब्द सुनाये, तारण भव जल पार।विष्णु हर.।
पन्थ जाम्भाणों सत्य कर जाणों यह खांडे की धार।
सत प्रीत सों करो कीर्तन इच्छा फल दातार।विष्णु हर.....।
आन पन्थ को चित से टारो, जम्भेश्वर उर ध्यान।
होम जाप शुद्ध भाव सों कीजो पावो पद निर्वाण। विष्णु हर..
भक्त उद्धारण काज संवारण श्री जम्भगुरू निज नाम।
विघ्न निवारण शरण तुम्हारी मंगल के सुख धाम। विष्णु हर।
लोहट नन्दन दुष्ट निकन्दन श्री जम्भगुरू अवतार।
ब्रह्मानन्द शरण सतगुरू की आवागवण निवार।
विष्णु हर की आरती जे।।

आरती 8

ओ३म् शब्द सोहं ध्यावे, स्वामी शब्द सोहं ध्यावे।
धूप दीप ले आरती, निज हरि गुण गावे।
मन्दिर मुकुट त्रिशूल ध्वजा धर्मों की फररावे।
झालर शंख टंकोरा, नोबत धररावे।।1।।
तीर्थ तालवो गुरू की समाधी, परस स्वर्ग जावे।
अड़सठ तीर्थ को फल समराथल पावे।।2।।
फागण मंझ शिव रात यात्री, रल मिल सब आवे।
झिगमिग ज्योति समराथल, शम्भु के मन भावे।।3।।
धर्मी करे आनन्द भवन में, पापी थररावे।
राजू शरण गुरू की क्यों मन भटकावे।4।
ओ३म् शब्द सोहं ध्यावे.....।

श्री सद्गुरू की
आरती 9

जय गुरू देव दया निधि, दीनन हितकारी।
जय जय मोह विनाशक, भव बंधन हारी।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय...।।टेक।।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, गुरू मुरती धारी।
वेद पुरान बखानत,गुरू महिमा भारी।ओ३म् जय....।1।
जप तप तीर्थ संयम, दान विविध दीन्हें।
गुरू बिन ज्ञान न होवे, कोटि यत्न कीन्हें।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.....।।2।।
माया मोह नदी जल, जीव बहै सारे।
नाम जहाज बिठा कर, गुरू पल में तारे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.....।।3।।
काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारे।
ज्ञान खड़ग ले कर में, गुरू सब संहारे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.....।।4।।
नाना पन्थ जगत में, निज निज गुण गावे।
सब का सार बताकर, गुरू मारग लावे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.....।।5।।
गुरू चरणामृत निर्मल सब पातक हारी।
बचन सुनत तम नाशे, सब संशय टारी।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.....।।6।।
तन मन धन सब अर्पण, गुरू चरणन कीजे।
''ब्रह्मानन्द'' परम पद, मोक्ष गति दीजे।।
ओ३म् जय गुरू देव, जय.....।।7।।

दोहा – परमानन्द जी बणियाल

हरिजस कथा साखी कहो, कवित छन्द श्लोक।
परमानन्द हरि नाम की, शोभा तीनों लोक।।1
के हरि की चरचा कर, के हरि हिरदे नाम।
प्रीतम पल न बिसारियो, चलता करता काम।।2
आई लहरि समंद की, मोती आया मांहिं।
बुगला तो यों ही रह्या, हंसा चूणि चुगाहि।।3
पुहप वास, कांसी शब्द, मीन पंछी का माघ।
हिरदे दिसटि जे देखिये, पावत थाह अथाघ।।4
मान बड़ाई वंश की, करता हैं सब कोय।
बूढ़ो वंश बड़ाइया, कोई हरिजन न्यारो होय।।5
पशु बोलायो बोल ही, नर भी आवै पासि।
करता किरपा करत हैं, अन्तर की अरदासि।।6
कोटि गरथनि मत ईह, वर गुरू एहु उपदेश।
हरि सेवा चित दिढ़ धरे, छाड़े सकल कलेस।।7
तेल जग्यो बाती बुझी, मंदर भयो अंधियार।
देखो सोच विचार कै, थीरि नहीं संसार।।8
सांई नांव संभालि ले, क्या सोवे नर नींद।
काल सिचाणों सिर खड़ो, ज्यों तोरण आयो बींद।।9
दुख दाझंता देवजी, लीवी तुम्हारी ओट।
तुम सरणैं दुख पाइये, तो सेवग ही मां खोट।।10

——————00000——————

विविध प्रकार की उन्नतीस नियम व्याख्या

।। चौपाई ।।

मास एक सूतक तुम मानों। पंचदिवस तक ऋतुमती जानों।।
प्रातरुत्थाय करो सब स्नाना। पालो शील (शौच) तौष सुजाना।।
दोनों काल की सन्ध्या मानी। मुनि जन गण यह साक्षी बखानी।।
सन्ध्या कर काटो मन मैला। देश विभक्त गहौ पुन शैला।।
सायंकाल विष्णु गुण गाओ। कर आरती परमानन्द पाओ।।
प्रेम सहित सब होम कराओ। पुनः बैकुण्ठ बास सब पाओ।।
अमृत पूत करो सब पाना। सम्यति एक करो मत नाना।।
पूत करो वाणी सुख दायी। विष्णु भजन में होगी सहाई।।
इन्धन छान बीन कर लेना। दृष्टि पूत बिन कहुं नहीं देना।।
क्षमा दया उर में सब धारो। गुरु आज्ञा बिन सब को टारो।।
गुरु जी जान कियो उपदेशा। धारण करो विष्णु आदेशा।।
हेय करो चोरी अरु निन्दा। इन संग मिथ्या जानों धन्धा।।
इन तीनों को बर्जो भाई। वाद विवाद न करियो कोई।।
अमावस्या व्रत कबहूं न टारो। विष्णु भजन कर कुल निस्तारो।।
जीव दया राखो मन माहीं। जिहिं राखे सब अघ मिटि जाहीं।।
वृष आदि स्थावर सब सृष्टि। ब्रह्मरूप यह जान समष्टी।।
इनमें नाना जीव विराजै। चेतन रूप सकल वपु छाजै।।
बिना विचारे नहीं इन्हें हरना। काट बाढ़ घर में नहीं धरना।।
अजर क्रोध जो ताहिं जरावै। लोभादि को दूर भगावै।।
निर अभिमानी ब्रह्मानन्दा। रहै मगन विचारै स्वै छन्दा।।
जीवन मुक्त सदा वैरागी। जांकी लगन स्वर्ग से लागी।।

अपने हाथ से पाक बनावै। पुनः एकांत बैठकर पावै।।
अजा अवी सब अमर रखावै। वृषभ नपुन्सक होने न पावै।।
अमल तमाल भांग नहीं पीना। कर निषेध रहै सदा अदीना।।
मद्य अरु मांस कभी न खावै। नीलाम्बर तन कबहुं न लावै।।

दोहा –

उनतीस धर्म की आखड़ी, हिरदय धारै जोय।
जम्भराय ऐसे कहै, फेर जन्म नहीं होय।।

–0–0–0–

–: छप्पय :–

श्री सन्त वील्हा जी कृत

ॐ जम्भ गुरु जगदीश, ईश नारायण स्वामी।
निर लेखक निरलेप, सकल घट अन्तर्यामी।
पेट पीठ नहिं ताहि, सकल को सन्मुख दर्शे।
पाप ताप तन हरे, जहां पद पंकज पर्शे।
अखे अडोल अनन्त अज, अवगत अलख अभेव।
स्वयं स्वरूपी आप है, जम्भगुरू जगदेव।
जम्भगुरू जगदेव, भेव कोई बिरला पावै।
रहै शरण जो आय, बहुरि भवजल नहि आवै।
विष्णु धर्म परगट कियो, धर्म विकट विहंडनम्।
संभराथल परगट सही, ज्योति स्वरूप जगमण्डनम्।
।। इति ।।

–0–0–0–